मयख़ाना

'अदम' अब्दुल हमीद

ख़ाली है अभी जाम मैं कुछ सोच रहा हूं
ऐ गर्दिशे-अय्याम[1] मैं कुछ सोच रहा हूं
साक़ी तुझे इक थोड़ी सी तकलीफ़ तो होगी
साग़र को ज़रा थाम, मैं कुछ सोच रहा हूं

साक़ी शराब ला कि तबीयत उदास है
मुतरिब[2] रबाब उठा कि तबीयत उदास है
तौबा तो कर चुका हूं मगर फिर भी ऐ 'अदम'
थोड़ा सा ज़हर ला कि तबीयत उदास है

आ ग़मे-दौरां[3] दरे-मयखाना[4] है नज़दीक
आराम से बैठेंगे ज़रा बात करेंगे
जन्नत में न मय है न मुहब्बत न जवानी
किस चीज़ पे इन्सां बसर-औक़ात[5] करेंगे

---

१. कालचक्र २. संगीतकार ३. सांसारिक दुःख ४. मधुशाला का दरवाज़ा। ५. निर्वाह

मयख़ाना

'अदम' अब्दुल हमीद

ख़ाली है अभी जाम मैं कुछ सोच रहा हूं
ऐ गर्दिशे-अय्याम[1] मैं कुछ सोच रहा हूं
साक़ी तुझे इक थोड़ी सी तकलीफ़ तो होगी
साग़र को ज़रा थाम, मैं कुछ सोच रहा हूं

साक़ी शराब ला कि तबीयत उदास है
मुतरिब[2] रबाब उठा कि तबीयत उदास है
तौबा तो कर चुका हूं मगर फिर भी ऐ 'अदम'
थोड़ा सा ज़हर ला कि तबीयत उदास है

आ ग़मे-दौरां[3] दरे-मयख़ाना[4] है नज़दीक
आराम से बैठेंगे ज़रा बात करेंगे
जन्नत में न मय है न मुहब्बत न जवानी
किस चीज़ पे इन्सां बसर-औक़ात[5] करेंगे

---

१. कालचक्र २. संगीतकार ३. सांसारिक दुःख ४. मधुशाला का दरवाज़ा। ५. निर्वाह

नशा पिला के गिराना तो सबको आता है
मजा तो जब है कि गिरतों को थाम ले साक़ी

ग़रूरे-मयकशी[1] की कौन सी मंजिल है ये साक़ी
खनक सागर की आवाज़े-खुदा मालूम होती है

साक़ी मेरे खुलूस की शिद्दत तो देखना
फिर आ गया हूं गर्दिशे-दौरां[2] को टालकर

सहर[3] के वक़्त मय पीने से मुझ को रोक मत नासेह[4]
कि सिजदे के लिए दिल में जरा सा सिद्क़[5] लाना है
'अदम' साक़ी को पछताना पड़ेगा अपनी ग़फ़लत पर
कि हमको दो घड़ी आराम करके लौट जाना है

मैं मयकदे की राह से होकर निकल गया
वर्ना सफ़र हयात[6] का काफ़ी तवील था

सौ जाम जहर और 'अदम' मय का एक घूंट
फिर भी ये तोहमतें हैं कि हम मयगुसार[7] थे

---

१. मदिरापान का अभिमान २. कालचक्र ३. सुबह ४. नसीहत करनेवाला ५. सच्चाई ६. जीवन ७. शराबी

जाने क्या पूछा था कल शब मुझसे इक मयख्वार[1] ने
आलमे-मस्ती[2] में लब पर आपका नाम आ गया

वरना दे साकी ज़रा सी रोशनी
ज़िन्दगी का रास्ता तारीक[3] है
कौन कौसर[4] तक मसाफत[5] तै करे
मयकदा फिर्दौस[6] से नज़दीक है

मुजरिमे-तौबा[7] तो हूं, लेकिन खुदा के वास्ते
इक ज़रा ये देख लीजेगा कि वक़्ते-शाम है
लोग कहते हैं 'अदम' ने मयगुसारी[8] छोड़ दी
इफ़तरा है, झूट है, बुहतान है, इल्ज़ाम है

तौबा को तोड़ने की नीयत न थी मगर
मौसम का एहतिराम[9] न करते तो ज़ुल्म था

पिला न इतनी कि रास्ते में मेरी मतानत[10] पे हर्फ़[11] आए
ये मेरी पहली खता है साकी मुझे कोई नर्म सी सज़ा दे

---

१. शराबी २. मस्ती की हालत ३. अंधेरा ४. जन्नत की नहर (शब्द की)
५. यात्रा ६. जन्नत ७. शराब पीने से तौबा करने का अपराधी ८. मदिरापान
९. आदर १०. गंभीरता ११. इल्ज़ाम

गिरे जब भी मयख्वार सिजदे में पीकर
सितारों में टकरा गए बादाखाने[1]

न जाम है, न सितारे, न कोई दोस्त 'अदम'
शबे-हयात[2] को मैं किस तरह गुजारूंगा

चांदनी रात में जब जश्न मनाता है शबाब[3]
हाय क्या चीज़ प्यालों में उबला करती है

इन्तिहा[4] की खबर नहीं मालूम
इब्तिदा[5] सागरे-शराब से[6] कर

जहां फ़क़ीरों को घेर लेती है नागहां[7] गर्दिशे-ज़माना[8]
वहां से रस्ता ज़रूर जाता है कोई सू-ए-शराबखाना[9]

जुल्मतों से[10] न डर कि रस्ते में
रोशनी है शराबखाने की

मय के बारे में 'अदम' इतनी खबर है हमको
चीज़ अच्छी है तबीयत की रवानी के लिए

---

१. शराबखाने २. जीवन रूपी रात ३. जवानी ४. अन्त ५. आरम्भ ६. शराब के प्याले से ७. अचानक ८. कालचक्र ९. शराबखाने की ओर १०. अंधेरों से

'अदम' बादाकशी[1] आदत थी पहले
मगर अब तो तबीयत हो गई है

मयकदे में मुझे महसूस हुआ है अक्सर
ये वो दुनिया है जहां ग़म की कोई रात नहीं

जवाब सहल था ज़ाहिद की गुफ़्तगू का 'अदम'
उठा के जाम ज़रा मुस्करा दिया होता

मयकदे[2] का ज़मीर[3] रोशन है
तेरी आंखों के आबगीनों से[4]

'अदम' रोज़े-अव्वल[5] जब क़िस्मतें तक़सीम होती थीं
मुक़द्दर[6] की जगह मैं सागरो-मीना[7] उठा लाया

हर मयकदे मे एक अक़ीदत[8] है ऐ 'अदम'
हर महजबीं[9] से आंख मिलाता चला गया

इन हसीं आंखों का याराना कहां गुम हो गया
महवे-हैरत[10] हूं कि मयख़ाना कहां गुम हो गया

---

१. मदिरापान २. मधुशाला ३. अंतर्मन ४. आंसुओं मे ५. आदि दिवस ६. भाग्य ७. शराब का प्याला और सुराही ८. श्रद्धा ९. चन्द्रमुखी १०. आश्चर्यचकित

नाज़िम है मयकदे की शरीअत[1] का एहतिराम[2]
ऐ दौरे-रोज़गार[3] ज़रा लड़खड़ा के चल

दैरो-हरम[4] नहीं तो ख़राबात[5] ही सही
ऐ गर्दिशे-ज़माना[6] कहीं तो क़याम कर[7]

बादाख़्वारी[8] हराम है या ज़िन्दगी हराम
तस्दीक़ कर रहा हूं ग़मे-रोज़गार से

तूफ़ाने-हवादिस में[9] साक़ी, कुछ लम्हे[10] जान से जी जाऊं
कुछ इश्क़ की तल्ख़ी सह जाऊं, कुछ ज़हर के सागर पी जाऊं
नौवारिदे-मयख़ाना[11] हूं 'मदम'! मालूम नहीं है जाम में क्या
इस सोच में खोया बैठा हूं, परहेज़ करूं या जी जाऊं

जब तक मेरे सबू[12] में ज़रा सी शराब है
मेरे लिए हयात[13] शबे-माहताब[14] है
ऐ मोहतसिब[15]! तमीज़ से सहबा[16] का नाम ले
कमबख़्त! ये हसीन सितारों का ख़्वाब है

---

१. धर्म २. आदर ३. कालचक्र ४. मन्दिर-मस्जिद (काशा-काबा) ५. शराबख़ाना ६. संसार-चक्र ७. ठहर ८. मदिरापान ९. घटनाओं के तूफ़ान में १०. क्षण ११. शराबख़ाने में नवागन्तुक १२. शराब का मटका १३. जीवन १४. चांदनी रात १५. रसाध्यक्ष १६. शराब

ग़ालिबन मय नहीं तो ज़ह्र सही
ये भी हम लोग जाम पीते हैं

कोई जाम इस तरह छलके कि मौसम लहलहा उट्ठे
कोई ज़ुल्फ़[1] इस तरह बिखरे कि गहरी शाम हो जाए
'मदम' जब होश में होता हूं यूं महसूस होता है
वो राहरौ[2] हूं जिसे जंगल में गहरी शाम हो जाए

मैं ग़ौर कर रहा हूं रमूज़े-हयात[3] पर
इस वक़्त इक छलकता हुआ जाम चाहिये
नाहक़ मुझे शराब की तोहमत[4] पसन्द नहीं
मुझको तेरी निगाह का इल्ज़ाम चाहिये
करता है उज़्रे-तौबा[5] ख़राबात[6] में 'मदम'
ऐ बेअदब इताअते-एह्काम[7] चाहिये

जब भी आता है जाम हाथों में
सैकड़ों नाम याद आते हैं

'मदम' की तश्नालबी[8] को कुछ और है मतलूब[9]
शराब दे मगर अन्दाज़ा-ए-ख़ुमार[10] न कर

---

१. केश २. राही, मुसाफ़िर ३. जीवन-रहस्य ४. इल्ज़ाम ५. तौबा पर आपत्ति (बहाना) ६. मधुशाला ७. आज्ञा-पालन ८. होंटों की प्यास ९. चाहिये १०. नशे का अनुमान

पीता हूं हादिसात के[1] दफ़्न[2] के लिए
मय एक तजज़िया[3] है ग़मे-रोज़गार का

ये जो दो क़तरे नज़र आते हैं साक़ी जाम में
हम पियेंगे इनको क्या और पी के लहरायेंगे क्या
पूछते हैं हम से अहले-होश[4] मस्ती का सबब
हम 'अदम' ख़ुद ही नहीं समझे तो समझायेंगे क्या

इलाज दो ही मुसल्लम[5] हैं शिद्दते-ग़म[6] के
शराबे-नाब[7] है या मर्गे-नागहानी[8] है

ऐ ख़ुदा-बन्दाने-मयख़ाना[9] तुम्हारी ख़ैर हो
आ गए ये इस तरफ़ भूले हुए भटके हुए

गुल[10] भी हैं, मय[11] भी है, मुग़न्नी[12] भी
आओ, आग़ाज़े - दौरे - जाम[13] करो
बात फिर हमसे पूछना, पहले
बदगुमानी को नज़्रे - जाम[14] करो

---

१. दुर्घटनाओं के २. अन्तर्धान (परिचय) ३. विश्लेषण ४. होश[illegible] प्रमाणित ६. ग़म का आधिक्य ७. शराब ८. अचानक मृत्यु ९. मधुरा[illegible] (मृ.हा, मार्मिक) १०. फूल ११. शराब १२. गायक १३. [illegible] का प्रारंभ (मदिरापान की शुरुआत) १४. प्याले का [illegible]

इसको तेरी से दहन[1] अब नहीं मस्ता साकी
जाम में मय[2] है, तेरा शो'ला-ए-रुख़सार[3] नहीं

शराब जितनी मुनासिब हो डाल दो इसमें
फ़क़ीर एक निकम्मा सा[4] जाम रखते हैं

शराब पीके तो मस्ती नहीं मगर इसमें
निज़ामे-आलमे-हस्ती[5] रवां सा[6] रहता है

'मदहोश' हमराह थी जो मयकदे तक
यहां तक होश को आना पड़ा है

जहां-जहां उनसे हम मिले थे
हसीं मुक़ामात[7] बन गए हैं
वहीं हरम[8] की बिना[9] पड़ी है,
वहीं ख़राबात[10] बन गए हैं
मेरे छलकते हुए सुबू से
जो चन्द क़तरे उड़े थे मय[11] के
तो मौसमे-गुल[12] की इल्तिजा पर
शफ़क़[13] की बरसात बन गए हैं

---

१. मुंह २. शराब ३. कान्तिरूपी शोला ४. टूटा सा ५. जीवन-व्यवस्था ६. जारी सा ७. स्थान ८. मस्जिद ९. नींव १०. शराबख़ाने ११. शराब १२. बसन्त ऋतु १३. अरुणोदय

नाम कंदा[1] है ग्रावगीनों पर[2]
कितने डूबे हुए सितारों के

हश्र[3] तक भी अगर सदायें[4] दें
बीत कर वक़्त फिर नहीं मुड़ते
सोच कर तोड़ना इन्हें साक़ी
टूट कर जाम फिर नहीं जुड़ते

माहो-ग्रंजुम[5] के सर्द होंटों पर
हमनशीं[6] तज़किरा[7] है सदियों का
जाम उठा ग्रौर दिल को ज़िंदा रख
ग्रासमां मक़बरा है सदियों का

एक रेज़ा[8] तेरे तबस्सुम[9] का
उड़ गया था शराबख़ाने से
हौज़े-कौसर[10] बना दिया जिसको
वाइज़ों ने[11] किसी बहाने से

---

१. खुदे हुए २. बुलबुलों पर ३. प्रलय ४. आवाजें ५. चांद-सि[...]
७. जिक्र ८. कण ९. मुस्कराहट १०. जन्नत की शराब का ता[...]
[...] ने

दुनिया में अब और चाहिये क्या मुझको
साक़ी भी है, साज़ भी, शराब भी है

जन्नत का मज़ा' दिखला दिया मुझको
वाइज़' का ग़म भुला दिया मुझको
कुछ होश नहीं कि हूँ मैं किस आलम में'
साक़ी ने ये क्या पिला दिया मुझको

नासेह'! हमारी तौबा में कुछ शक नहीं मगर
शाना' हिलायें आ के घटायें तो क्या करें
मयख़ाना दूर, रास्ता बारीक', हम मरीज़
मुँह फेर दें उधर जो हवाएँ तो क्या करें

जनां' में पहले-पहल पियेगा तो लड़खड़ाता फिरेगा ज़ाहिद'
शराबे-कौसर' की है मगर धुन, जहां में पी ले शराब पहले
निगाह साक़ी की मुस्कराई कहा जब 'अख़्तर' ने अपनी धुन में
पियेंगे पीते रहेंगे मयकश, मगर ये साना-शराब पहले

मुख़्तसर सोहबत है साक़ी, जल्द-जल्द
जाम उठा, मीना'' बढ़े, साग़र चले

. २. संसार ३. हालत में ४. नसीहत करने वाला ५. कंधा
७. जन्नत ८. विरक्त ९. जन्नत की शराब १०. सुराही

रहे मर कर भी यारब मयकदे में दौर मस्तों का
बनाए जायें इनको खाक से जामो-सबू[1] बरसों

मसजिद में बुलाते हैं हमें ज़ाहिदे-नाफ़हम[2]
होता कुछ अगर होश तो मयख़ाने न जाते

अंगूर में यही थी पानी की चार बूंदें
पर जब से खिंच गई हैं तलवार हो गई हैं

ज़ाहिद उमीदे-रहमते-हक़[3] और हज्वे-मय[4]
पहले शराब पी के गुनहगार भी तो हो

कुछ ज़हर न थी शराबे-अंगूर[5]
क्या चीज हराम हो गई है

वो मस्त होश में आने का क़स्द[6] करता है
पुकारता है ये साकी कि होशियार हूं मैं

जुदा है दुख्तरे-रज[7] का नाम हर सोहबत[8] में ऐ साक़ी
परी है मयकशों में[9], हूर है परहेज़गारों में

---

१. प्याले और सुराहियां २. नासमझ विरक्त ३. खुदा की कृपा की आशा ४. शराब की बुराई ५. अंगूर की शराब ६. इरादा ७. अंगूर की बेटी ८. महफ़िल ९. मयपों में

न ये शीशा[1], न ये साग़र[2], न ये पैमाना बने
जाने-मयख़ाना तेरी नर्गिसे-मस्ताना[3] बने

बहुत लतीफ़[4] इशारे थे चश्मे साक़ी के[5]
न मैं हुआ कभी बेख़ुद[6] न हुशियार हुआ

एक ऐसी भी तजल्ली[7] आज मयख़ाने में है
लुत्फ़ पीने में नहीं है बल्कि खो जाने में है

'असीर' लखनवी

शीशा[8] रहे बग़ल में जामे-शराब लब पर[9]
साक़ी, यही मज़ा है दो दिन की ज़िन्दगी का

हुआ जो ख़ाक बदन, सागरे-शराब[10] बना
हज़ार शुक्र कि ज़र्रे[11] से आफ़ताब[12] बना

---

१. बोतल २. प्याला ३. मस्त आंखें ४. नाज़ुक, मृदुल ५. साक़ी की आंख के ६. बेहोश ७. ज्योति (प्रभा, प्रेयसी) ८. बोतल ९. होंठों पर १०. शराब का प्याला ११. कण १२. सूरज

इक जाम मुझे बनाम-ख़ुदा[1] ऐ साक़ी!
पर्दे से ज़रा सामने आ ऐ साक़ी
मुतरिब[2] जो नहीं छेड़ तू ही इक नग़मा
है गोश बर-आवाज़[3] फ़िज़ा[4] ऐ साक़ी

मुझ रिन्द[5] को बख़्शी शराब ऐ साक़ी
दुनिया में नहीं तेरा जवाब ऐ साक़ी
हर क़तरा मेरे हक़ में करम[6] की बारिश
अब जाम का तू करले हिसाब ऐ साक़ी

साक़ी ने कहा ग़ैरत-नाहीद[7] हूं मैं
मय बोल उठी जल्वा-ए-उमीद हूं मैं
साग़र से छलक कर जो ज़मीं तक पहुंची
हर ज़र्रा पुकार उट्ठा कि ख़ुर्शीद[8] हूं मैं

मग़रिब[9] से उमंडते हुए बादल आए
भीगी हुई रुत और सुहाने साए
साक़ी, लबे-जू[10], मुतरिबे-नौख़ेज़[11], शराब
है कोई जो वाइज़[12] को बुलाकर लाए

१. ख़ुदा के नाम पर २. गायक ३. आवाज़ पर कान लगाए ४. वातावरण ५. मयप ६. दैवी कृपा ७. ज़ोहरा (सितारे) को श वाला ८. सूरज ९. पश्चिम १०. नदी का किनारा ११. नवयुवा गा १२. धर्मोपदेशक

क्यों न हो शौक़े-जाम सावन में
मय को निसबत[1] है इस महीने से

एक शे'र

खुश्क बातों में कहां ऐ शैख़[2] कैफ़े-जिन्दगी[3]
वो तो पीकर ही मिलेगा जो मज़ा पीने में है

'अख़्तर' अली अख़्तर

करवटें लेती है फूलों में शराब
हम से इस वक़्त में तौबा होगी ?

कुछ इस निगाह से देखा था मुझ को साक़ी ने
छुटी शराब मगर शाने-बेखुदी[4] न गई

हैफ़ है वो रिन्दे-नामुराद[5] जिस ने उठाके जामे मय[6]
हाथ से फिर गिरा दिया, रंजे-खुमार[7] देखकर

१. सम्बन्ध २. धर्मगुरु ३. जीवन का आनन्द ४. आत्मविस्मृति की [illegible] ५. बदकिस्मत ६. नामुराद शराबी ७. शराब का प्याला ८. [illegible]
। रंज

मुमकिन नहीं मैं तर्क करूँ मयनोशी[1]
और कातिबे-तक़दीर[2] को जाहिल ठहराऊं

भर दे मेरा पैमाना[3] लबालब साक़ी
जल उठने को हैं सीने के ज़ख़्म अब साक़ी
ये भी मेरा मक़्सूम[4] है वो भी तक़दीर
तक़दीर है इक जिह्‌ले-मुरक्कब[5] साक़ी

शे'र

शायरी हो कि शग़ले-नग़्मा-ओ-मय[6]
मुद्दआ[7] ख़ुद को भूल जाना है

'अख़्तर' लखनवी

इक हमीं नहीं साक़ी लाइक़े-करम[8] तन्हा[9]
और भी हैं तश्ना-लब[10], बस नहीं हैं हम तन्हा

---

१. मदिरा पान २. भाग्य-लेखक ३. प्याला ४. भाग्य ५. निश्चित मूर्ख
ठोस मूर्खता ६. संगीत और मदिरापान का मज़ापना (दिल-बहला
७. उद्देश्य ८. कृपा-पात्र ९. अकेले १०. प्यासे

पारसा[1] मगर तुम भी बन गए तो ग़म कैसा
हम रखेंगे रिन्दी का[2] दोस्तो! भरम तन्हा

हम से रिन्दों का ठिकाना क्या है
तुम कहाँ शेखे-हरम[3] साथ चले!

'अख़्तर' हरीचन्द

वही है अपनी रिन्दी[4] और वही वाइज़[5] की फ़हमाइश[6]
बुरी आदत कोई भी हो ब-आसानी नहीं जाती

'अजमल' अजमली

तेरे दर से[7] ग़म लेकर जब गुनाहगार उट्ठे
मस्जिदों का कहना क्या मयकदे संवार आए

---

१. संयमी या परहेज़गार २. शराबी होने का ३. मस्जिद का इमाम या धर्म गुरु ४. मदिरापान ५. धर्मोपदेशक ६. अनुरोध ७. दरवाज़े से

खाने के लिए उससे भला क्या मांगूं
जी भर के जो पीने भी नहीं देता है

इक लुत्फ़ भी है ग़म के सिवा जीने में
तल्खी सही मस्ती भी तो है पीने में
मैं तालिबे-फ़िर्दौस[1] नहीं ऐ जाहिद[2]
सदशुक्र[3] कि दोज़ख है मेरे सीने में

फिर 'हाफ़िज़ो-'ग़ालिब' को जवानी दे दूं
'ख़य्याम' को फिर क़ालिबे-सानी[4] दे दूं
इकपल के लिए मैं जो खुदा हो जाऊं
दुनिया को बस अंगूर का पानी दे दूं

अलीअहमद जलीली

कोई साग़र न पहुंचा मेरे ज़र्फ़[5] तक
तश्नगी[6] हासिले-तश्नगी[7] रह गई

१. जन्नत का इच्छुक २. विरक्त, पारसा ३. सौ शुक्र ४. नया शरीर
पीने की सामर्थ्य ६. प्यास ७. प्यास की प्राप्ति (पूर्णता)

अली जवाद ज़ैदी

बेखुदी[1] में हाथ कांपा, जाम[2] छूटा, मय गिरी
जाने किन नज़रों से देखेगी भरी महफ़िल मुझे

'अल्ताफ़' मुशहदी

शैख़[3] के मुंह में भी पानी आ गया
कैफ़-आवर[4] मयकदे की बात पर

'असर' लखनवी

क्या हमने छलकते हुए पैमाने में[5] देखा
ये राज़ है मयख़ाने का इफ़शा[6] न करेंगे

---

१. आत्म विसर्जन २. प्याला ३. धर्मगुरु ४. नशीली ५. प्याले में ६. प्रकट

'अकबर' इलाहाबादी

मय[1] भी होटल में पियो चन्दा भी दो मस्जि
शेख़[2] भी ख़ुश रहे, शैतान भी बेज़ार न

हंगामा है क्यों बरपा, थोड़ी सी जो पी ली
डाका तो नहीं डाला, चोरी तो नहीं की

शेख़ की दावत में मय का क्या काम
एहतियातन कुछ मँगा ली जाएगी

'अकबर' के जो मरने की ख़बर
साक़ी ने सुनी तो ख़ूब कहा
मरना तो ज़रूरी था ही इसे,
रिन्दों के[3] लिए कुछ कर भी गया

दुख़्तरे-रज़[4] ने उठा रखी है आफ़त सर प
ख़ैरियत गुज़री कि अंगूर के बेटा न हुअ

---

१. शराब, मदिरा २. धर्म गुरु ३. पक्के शराबियों के ४.

'आज़ाद' अनसारी

बहम[1] मगर कभी याराने-बादाख्वार[2] हुए
तो एक जाम के हम भी गुनाहगार हुए

'अज़ाद' जगन्नाथ

जामो-सबू के बाद तेरी याद आ गई
शायद तेरा मुक़ाम[3] है जामो-सबू के बाद

मेरे सरूर से अन्दाज़ा-ए-शराब न कर
मेरा सरूर बान्दाज़ा-ए-शराब[4] नहीं

अल्लाह रे उस शोख़ की रफ़्तार का आलम[5]
हर लम्हा[6] संभलता हुआ मयख्वार हो जैसे

मैं उस साक़ी पे ऐ 'आज़ाद'! सदके जिस की महफ़िल में
सरूर आ भी चुका, आई नहीं लेकिन शराब अब तक

---

१. इकट्ठे २. शराबी मित्र ३. स्थान ४. शराब की मात्रा के अनुरूप
५. हालत ६. क्षण

'आतश'

फ़स्ले-शराब[1] आई, पियो सूफ़ियो शराब
बस हो चुकी नमाज़, मुसल्ला[2] उठाइये

मगर उसको फ़रेबे-नरगिसे-मस्ताना[3] आता है
उलटती हैं सफ़ें, गर्दिश में जब पैमाना आता है

हर शब शबे-बारात है, हर रोज़ रोज़े-ईद
सोता हूं हाथ गर्दने-मीना में[4] डाल के

'आबरू'

पीता नहीं शराब कभी बे वज़ू किये
क़ालिब[5] में मेरे रूह किसी पारसा की है

---

१. शराब पीने का मौसम २. नमाज़ पढ़ने की चटाई ३. नर्गिस के फूल जैसी मस्त आंखों का धोखा देना ४. सुराही की गर्दन में ५. शरीर

आबिद अली 'आबिद'

बादा-नोशी[1] पे मुसिर[2], बादानोशी पे ख़फ़ा
महवे-हैरत[3] हूं कि ये लोग भी क्या होते हैं

'आरज़ू' लखनवी

चश्मे-साक़ी में[4] खुमार आते ही पैमाना[5] बना
हाथ अंगड़ाई को उट्ठे और मयख़ाना बना

साक़ी तेरे मयख़ाने में जब हम नहीं होंगे
सब टूटे हुए जाम हमें याद करेंगे

हाथ से किसने सागर पटका, मौसम की बेकैफ़ी पर[6]
ऐसा बरसा टूट के बादल डूब चला मयख़ाना भी

---

१. मदिरापान २. आग्रही ३. हैरान ४. साक़ी की आंखों में ५. प्याला
६. मौसम के फीकेपन पर

'आसी'

अभी तो देखते हैं ज़र्फ़[1] बादाख़्वारों का[2]
ख़ुमो-सुबू की[3] भी ठहरेगी दौरे-जाम के बाद

मस्ती में कोई राज़ जो 'मानी' से फ़ाश[4] हो
माज़ूर[5] है अभी कि नया बादाख़्वार[6] है

जनाबे-शैख़[7] भी चुपके से कह गए आख़िर
शराब रात को अकसर हलाल होती है

'इक़बाल' अलामा

रुबाई

तेरे शीशे में[8] मय बाक़ी नहीं है
बता क्या तू मेरा साक़ी नहीं है
समुन्दर से मिले प्यासे को शबनम
बख़ीली[9] है ये रज़्ज़ाक़ी[10] नहीं है

---

१. सामर्थ्य २. मद्यपों का ३. शराब के मटके मटकियों की ४. प्रकट ५. विवश ६. शराब पीने वाला ७. श्रीमान धर्मगुरु ८. बोतल में ९. कंजूसी १०. अन्न दाता-पन

शे'र

मुहब्बत के लिए दिल ढूंढ कोई टूटने वाला
ये वो मय[1] है जिसे रखते हैं नाज़ुक आबगीनों में[2]

मेरी निगाह में वो रिन्द ही नहीं साक़ी
जो होशियारी-ओ-मस्ती में इम्तियाज़[3] करे

गर न था तू शरीके-महफ़िल[4]
क़ुसूर तेरा है या कि मेरा
मेरा तरीक़ा नहीं कि रख लूं
किसी की ख़ातिर मय-ए-शबाना[5]

'इक़बाल' सफ़ीपुरी

ये मेरा मज़ाक़े-तश्नालबी[6] भी
ले आया मुझे किस मंज़िल पर

१. मदिरा २. शीशे के पात्रों में ३. फ़र्क़ ४. महफ़िल में शामिल ५. सुबह पीने के लिए रात को बचाकर रखने वाली शराब ६. प्यासा रहने की अभिरुचि

'ऐश' टोंकवी

मयकदे के बामो-दर पर[1] किरा वसा या नूर[2] है
ये मेरा सागर[3] है रोशन या चिराग़े-तूर[4] है
बेज़रूरत आप क्यों फ़िक्रे-मय-ओ-सागर[5] करें
मयकदे का मयकदा अब बे पिये-मसरूर[6] है

'ओज'

खुद गिरे, लेकिन छलकने दी न मय
अपने सर ले लीं बलाएं जाम की

'क़तील' शिफ़ाई

ग़ज़लें

शहर के वे आबरू लोगों से याराना भी है
लेकिन अपना मोतक़िद[7] अब पीरे-मयख़ाना[8] भी है

---

१. छतों और दरवाज़ों पर २. प्रकाश ३. प्याला ४. तूर (नामक पहाड़) पर का चिराग़ (बिजली द्वारा प्रकट होने वाली आकाशवाणी) [illegible] । तथा प्याले की चिन्ता ६. प्रसन्न ७. श्रद्धालु ८. शराब बेचने वाला

पाए-साक़ी पर[1] गिरे हैं यूं तो कितने बादानोश[2]
अपनी लग़्ज़िश[3] में मगर इक शाने-रिन्दाना[4] भी है
उन की आंखों से न शायद हमको फ़ुर्सत मिल सके
वर्ना अपने हाथ में शीशा[5] भी पैमाना[6] भी है
क्यों झुलसते हो गमों की धूप में ऐ राहियो
सामने जब साया-ए-दीवारे-मयख़ाना[7] भी है

इक जाम खनकता जाम, कि साक़ी रात गुज़रने वाली है
इक होश-रुबा[8] इनआम, कि साक़ी रात गुज़रने वाली है
वो देख सितारों के मोती हर आन बिखरते जाते हैं
अफ़लाक पे[9] है कुहराम, कि साक़ी रात गुज़रने वाली है
जो देख चुका हूं पहले भी नज़्ज़ारा दरिया-नोशी का[10]
इक और सला-ए-आम[11], कि साक़ी रात गुज़रने वाली है

ये वक़्त नहीं है बातों का पलकों के साये काम में ला
इल्हाम[12] कोई इल्हाम, कि साक़ी रात गुज़रने वाली है
मदहोशी में एहसास के ऊंचे ज़ीने से गिर जाने दे
इस वक़्त न मुझको थाम कि साक़ी रात गुज़रने वाली है

---

१. साक़ी के पैरों पर २. शराबी ३. लड़खड़ाहट ४. मयख्वारों की शान ५. बोतल ६. प्याला ७. मधुशाला की दीवार की छाया ८. होश उड़ा देने वाला ९. आकाशों पर १०. दरिया (बहुत अधिक शराब) पीने का ११. सबको मिलने वाला १२. देववाणी

पीता हूँ, पै दिनरात नहीं पीता हूँ
जब तक न हो बरसात, नहीं पीता हूँ
साक़ी की इशारा[1] तो बरहक़[2] लेकिन
मयख़ाने भी मैं रात नहीं पीता हूँ

शे'र

ये मयख़ाना है इसमें जो भी आ जाए वो अपना है
ये मयख़ाना है, इसमें कोई बेगाना नहीं आता
सबू[3] हम उठके लेंगे अभी ख़ुद बढ़के साक़ी से[4]
मगर कुछ देर हम तक दौरे-पैमाना नहीं आता

मय नहीं है न सही, मयकदा फिर मयकदा है
जाम ख़ाली ही उठाओ कि ज़रा जी बहले
करके लबरेज़ मय-नाब[5] से अपना चुल्लू
मेरे होंटों से लगाओ कि ज़रा जी बहले

कौसर[6] पे जाके शेख़[7] से कह दो, वुज़ू करें
फिर उसके बाद ज़िक्रे-मय-मुश्क बू[8] करें

२. उचित ३. शराब की मटकी ४. साक़ी के हाथ से ५. शराब
६. की नहर ७. धर्म गुरु ८. सुगन्धित मदिरा

इतनी मिली कि होंट भी मुश्किल से तर हुए
साक़ी को ज़िद है मस्ता में फिर भी गुलू[1] करें

कौन समझेगा मेरी तश्नालबी[2] का मफ़हूम[3]
जाम उठाया है तो साक़ी को हया[4] आती है

'करम' हैदराबादी

गुज़री जो मयख़्वारों पर[5], साक़ी जाम न होने पाए
वर्ना जाम लहू रोयेंगे, पैमाने फ़रियाद करेंगे
ये महरूमी[6] आख़िर कब तक! सब्र की कोई हद होती है
रिन्द[7]—जो अब भी बन्द रहेंगे, मयख़ाने फ़रियाद करेंगे

आज सरे-महफ़िल[8] जो उसने तोड़ा जाम तो होश आया
पीरे-मुग़ां[9] के साथ हमारे कैसे कुछ याराने थे

वाइज़ ख़ता मुआफ़ कि रिन्दाने-मयकदा[10]
दिल के सिवा किसी का कहा मानते नहीं

---

१. अतिशयोक्ति २. होंटों की प्यास ३. अर्थ ४. लज्जा ५. मद्यपों पर ६. वंचितता ७. मद्यप ८. भरी महफ़िल में ९. मदिरा विक्रेता १०. मधुशाला के मद्यप

पीता हूं, पे दिनरात नहीं पीता हूं
जब तक न हो सौग़ात, नहीं पीता हूं
साक़ी की इनायात[1] तो बरहक़[2] लेकिन
मयख़ाने की ख़ैरात नहीं पीता हूं

शे'र

ये मयखाना है इसमें जो भी आ जाए वो अपना है
ये मयखाना है, इसमें कोई बेगाना नहीं आता
सबू[3] हम उठके लेलेंगे अभी ख़ुद दस्ते साक़ी से[4]
अगर कुछ देर हम तक दौरे-पैमाना नहीं आता

मय नहीं है न सही, मयकदा फिर मयकदा है
जाम ख़ाली ही उठाओ कि ज़रा जी बहले
करके लबरेज़ मय-नाब[5] से अपना चुल्लू
मेरे होंटों से लगाओ कि ज़रा जी बहले

कौसर[6] पे जाके शैख़[7] से कह दो, वुज़ू करें
फिर उसके बाद ज़िक्रे-मय-मुश्क बू[8] करें

१. कृपाएँ २. उचित ३. शराब की मटकी ४. साक़ी के हाथ से ५. शराब
६. जन्नत की शराब की नहर ७. धर्म गुरु ८. सुगन्धित मदिरा

इतनी पिलो कि होंट भी मुश्किल से तर हुए
साक़ी को ज़िद है, गरचा मैं फिर भी ग़ुलू' करें

कौन समझेगा मेरी तश्नालबी' का मफ़हूम'
जाम उठाया है तो साक़ी को हया' आती है

'करम' हैदराबादी

गुज़री जो मयख़्वारों पर', साक़ी आम न होने पाए
वर्ना जाम लहू रोयेंगे, पैमाने फ़रियाद करेंगे
ये महरूमी' आख़िर कब तक ! सब्र की कोई हद होती है
रिन्द'—जो अब भी बन्द रहेंगे, मयख़ाने फ़रियाद करेंगे

आज सरे-महफ़िल' जो उसने तोड़ा जाम तो होश आया
पीरे-मुग़ां' के साथ हमारे कैसे कुछ याराने थे

वाइज़ ख़ता मुआफ़ कि रिन्दाने-मयकदा''
दिल के सिवा किसी का कहा मानते नहीं

---

१. अतिश्योक्ति २. होंटों की प्यास ३. अर्थ ४. लज्जा ५. शराबी पर
६. वंचितता ७. मद्यप ८. भरी महफ़िल में ९. मदिरा विक्रेता
१०. मधुशाला के मद्यप

'ख़ुमार' अनसारी

वो लोग जिनमें जुरअते-बादानोशी[1] न थी
साक़ी की इक निगाह से मख़मूर[2] हो गए

'ख़ुमार' बारहबंकवी

पिला के मदभरी आँखों कहा ये साक़ी ने
हराम कहते हैं जिसको ये वो शराब नहीं

'ग़ालिब'

कहाँ मयख़ाने का दरवाज़ा 'ग़ालिब' और कहाँ वाइज़[3]
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले

मैं और बज़्मे-मय[4] से यूं तश्नाकाम[5] आऊं
गर मैंने की थी तौबा साक़ी को क्या हुआ था

---

१. मदिरा पान का साहस २. मस्त ३. धर्मोपदेशक ४. शराब की महफ़िल ५. प्यासा

ालिब छुटी शराब पर अब भी कभी-कभी
ीता हूं रोज़े-अब्रो-शबे-माहताब[1] में

ब मयकदा छुटा तो फिर अब क्या जगह की क़ैद
स्जिद हो, मदरसा हो, कोई ख़ानक़ाह हो

मय वो क्यों बहुत पीते, बज़्मे-ग़ैर में[2] या रब
आज ही हुआ मंज़ूर, उनको इम्तहां अपना

साबित हुआ है गर्दने-मीना[3] पे ख़ूने-ख़ल्क़[4]
लरज़े है मौजे-मय[5] तेरी रफ़्तार देख कर

मय से ग़रज़ निशात[6] है किस रू-सियाह[7] को
इक-गूना[8] बेख़ुदी[9] मुझे दिन रात चाहिये

हमसे खुल जाओ बवक़्ते-मयपरस्ती[10] एक दिन
वर्ना हम छेड़ेंगे रख के उज़्रे-मस्ती[11] एक दिन
क़र्ज़ की पीते थे मय और समझते थे कि हां
रंग लाएगी हमारी फ़ाक़ामस्ती एक दिन

---

१. जिस दिन बादल छाते हैं और जिस रात को चांद निकलता है २. प्रतिद्वन्द्वी की महफ़िल में ३. सुराही की गर्दन ४. जनता का रक्तपात ५. शराब की लहर ६. आनन्द ७. काले मुंह वाला (अभागा) ८. एक प्रकार की ९. आत्म-विसर्जन १०. शराब पीते समय ११. मस्त होने की आड़ लेकर

पीता हूं, पे दिनरात नहीं पीता हूं
जब तक न हो सौग़ात, नहीं पीता हूं
साक़ी को इनायात[1] तो बरहक़[2] लेकिन
मयख़ाने को ख़ैरात नहीं पीता हूं

शे'र

ये मयख़ाना है इसमें जो भी आ जाए वो अपना है
ये मयख़ाना है, इसमें कोई बेगाना नहीं आता
सबू[3] हम उठके लेलेंगे अभी खुद दस्ते साक़ी से[4]
अगर कुछ देर हम तक दौरे-पैमाना नहीं आता

मय नहीं है न सही, मयकदा फिर मयकदा है
जाम खाली ही उठाओ कि ज़रा जी बहले
करके लबरेज़ मय-नाब[5] से अपना चुल्लू
मेरे होंटों से लगाओ कि ज़रा जी बहले

कौसर[6] पे जाके शेख़[7] से कह दो, वुज़ू करें
फिर उसके बाद ज़िक्रे-मय-मुश्क बू[8] करें

---

१. कृपायें २. उचित ३. शराब की मटकी ४. साक़ी के हाथ से ५. शराब
६. जन्नत की शराब की नहर ७. धर्म गुरु ८. सुगन्धित मदिरा

ेफी' दत्तात्रय

ः कर गए खाली, गम क्या ?
है और खुम में शराब और भी है

'खंजर'

ल न प्यासा मुझे मयखाने से
की छलक जायेगी पैमाने से

'ख़याल'

घूंट पिला दे तेरे सदके साक़ी
से कहीं दाम दिये जाते हैं

—

है रिन्दो-मोहतसिब में[1] तो रोज़े-अज़ल से[2] बैर
ऐ अहले-शह्र[3] इतना भी तुम जानते नहीं

'क़स' देहल्वी

बोतल खुली जो हज़रते-ज़ाहिद[4] के वास्ते
मारे खुशी के काग भी दो गज़ उछल गया

'क़ाइम' चांदपुरी

मजलिसे-वा'ज़[5] तो ता-देर[6] रहेगी क़ाइम
ये है मयख़ाना अभी पीके चले आते हैं

'कैफ़ी' आज़मी

कहीं साग़र[7] लबालब हैं, कहीं खाली प्याले हैं
ये कैसा दौर है साक़ी, ये क्या तक़सीम[8] है साक़ी

---

१. मद्यप और रसाध्यक्ष में २. आदिकाल से ३. नगर निवासियो
४. श्रीमान विरक्त महोदय ५. धर्मोपदेश की सभा ६. देर तक ७. प्याले
८. बंटवारा

'कैफ़ी' दत्तात्रय

यार पैमाने[1] अगर कर गए ख़ाली, ग़म क्या ?
अब भी अब्र[2] आता है और खुम में[3] शराब और भी है

'ख़ंजर'

साक़िया टाल न प्यासा मुझे मयख़ाने से
मेरे हिस्से की छलक जायेगी पैमाने से

'ख़याल'

मुफ़्त दो घूंट पिला दे तेरे सदक़े साक़ी
हम ग़रीबों से कहीं दाम दिये जाते हैं

---

१. प्याले २. बादल ३. शराब के मटके में

'ख़ुमार' अनसारी

वो लोग जिनमें जुरअते-बादाकशी[1] न थी
साक़ी की इक निगाह से मख़मूर[2] हो गए

'ख़ुमार' बाराबंकवी

दिखा के मदभरी आँखें कहा ये साक़ी ने
हराम कहते हैं जिसको ये वो शराब नहीं

'ग़ालिब'

कहाँ मयख़ाने का दरवाज़ा 'ग़ालिब' और कहाँ वाइज़[3]
पर इतना जानते हैं कल वो जाता था कि हम निकले

मैं और बज़्मे-मय[4] से यूँ तश्नाकाम[5] आऊँ
गर मैंने की थी तौबा साक़ी को क्या हुआ था

१. पान का साहस २. मस्त ३. धर्मोपदेशक ४. शराब को
५. प्यासा

ग़ालिब' छुटी शराब पर अब भी कभी-कभी
पीता हूं रोज़े-अब्रो-शबे-माहताब[1] में

जब मयकदा छुटा तो फिर क्या जगह की क़ैद
मस्जिद हो, मदरिसा हो, कोई ख़ानक़ाह हो

मय वो क्यों बहुत पीते, बज़्मे-ग़ैर में[2] या रब
आज ही हुआ मन्ज़ूर, उनको इम्तिहां अपना

साबित हुआ है गर्दने-मीना[3] पे खूने-ख़ल्क़[4]
लरज़े है मौजे-मय[5] तेरी रफ़्तार देख कर

मय से ग़रज़ निशात[6] है किस रू-सियाह[7] को
इक-गूना[8] बेख़ुदी[9] मुझे दिन रात चाहिये

हमसे खुल जाओ बवक़्ते-मयपरस्ती[10] एक दिन
वर्ना हम छेड़ेंगे रख के उज़्र-मस्ती[11] एक दिन
क़र्ज़ की पीते थे मय और समझते थे कि हां
रंग लाएगी हमारी फ़ाक़ामस्ती एक दिन

---

१. जिस दिन बादल छाते हैं और जिस रात को चांद निकलता है
२. प्रतिद्वन्द्वी की महफ़िल में ३. सुराही की गर्दन ४. जनता का रक्तपात
५. शराब की लहर ६. आनन्द ७. काले मुंह वाला (अभागा) ८. एक प्रकार की
९. आत्म-विसर्जन १०. शराब पीते समय ११. मस्त होने की आड़ लेकर

हरचन्द[1] हो मुशाहिदा-ए-हक़[2] की गुफ़्तगू
बनती नहीं है बादा-ओ-साग़र कहे बग़ैर

रात पी ज़मज़म[3] पे मय और सुब्ह दम
धोये धब्बे जामा - ए - अहराम[4] के

जांफ़िज़ा[5] है बादा[6], जिसके हाथ में जाम आ गया
सब लकीरें हाथ की गोया रगे-जां[7] हो गईं

और ले आये बाज़ार से, अगर टूट गया
साग़रे-जम[8] से मेरा जामे-सिफ़ाल[9] अच्छा है

ये मसाइले-तसव्वुफ़[10], ये तेरा बयान[11] 'ग़ालिब'
तुझे हम वली समझते जो न बादाख्वार[12] होता

रात के वक़्त मय पिये साथ रक़ीब[13] को लिए
आए वो यूं ख़ुदा करे पर न करे ख़ुदा कि यूं

---

१. यद्यपि २. सत्य के दर्शन (अध्यात्मक) ३. मक्के का पवित्र कुआं ४. हज के वक़्त पहना जाने वाला कपड़ा ५. आयु-वर्द्धक ६. शराब ७. शाहरग ८. सेपी का पवित्र प्याला ९. मिट्टी का प्याला १०. अध्यात्मक समस्यायें ११. व्याख्या १२. शराबी १३. प्रतिद्वन्दी

ये तश्ना लब[1] न ग़र्क़ हों ख़ुद ही तो और बात
यूं तो शराब इनके प्यालों में कम नहीं

'जफर' बहादुरशाह

वो बेहिजाब[2] जो कल पी के यां शराब आया
अगर्चे मस्त था मैं, पर मुझे हिजाब[3] आया

हमें साग़रो-बादा[4] के देने में अब
करे देर जो साक़ी तो हाय ग़जब
कि ये अहदे-निशात[5], ये दौरे-तरब[6]
न रहेगा जहां में सदा, न रहा

सिराजुद्दीन 'जफ़र'

दरे-मयख़ाना[7] से दीवारे-चमन[8] तक पहुंचे
हम ग़ज़ालों के[9] तआक़ुब में[10] ख़तन[11] तक पहुंचे

---

१. प्यासे होंठ २. बेशर्म (निर्लज्ज) ३. लज्जा ४. प्याला और शराब ५-६. हर्ष तथा आनन्द का ज़माना (समय) ७. मधुशाला का दरवाज़ा ८. बाग़ की दीवार ९. युवा हिरनों या हिरनियों के १०. पीछा करते हुए ११. मध्य एशिया

हाथ मयख्वारों के बेक़स्द[1] उठे थे लेकिन
इत्तिफ़ाक़न[2] तेरे गेसू की[3] शिकन तक पहुंचे
यूं सरे-राह भरे बैठे हैं मयकश[4] कि बहार
अब के आए तो सलामत न चमन तक पहुंचे

उठा साग़र कि मयख्वारों के आगे
नहीं चलती किसी की तमतराक़ी[5]
संभलकर ऐ खिज़ां के कारवानो
बहारें हैं मेरे साग़र में बाक़ी

'जलाल'

शब को मय खूब सी पी, सुबह को तौबा करली
रिन्द[6] के रिन्द रहे, हाथ से जन्नत न गई

यूं तो पीता नहीं, पी लेता हूं गाहे-गाहे[7]
वो भी थोड़ी-सी मज़ा मुंह का बदलने के लिए

खबर क्या किसने शेखो-बिरहमन[8] में झगड़े डाले हैं
मगर सब बज़्मे-रिन्दां[9] में तुम्हारा नाम लेते हैं

---

१. निरुद्देश्य २. संयोगवश ३. केशों की ४. मद्यप ५. कड़ाई
६. मद्यप ७. कभी-कभी ८. मुल्ला और पण्डित ९. नशेड़ियों की महफ़िल

ज़ाहिद[1] को रिन्द उभार के लाये हैं राह पर
कुछ-कुछ मगर करामते-पीरे-मुग़ां[2] भी है

जहूर नजर

वो रिन्द हैं कि अगर मयकदे से कुछ न मिला
तो ख़ुद को शीशा-ए-मय[3] में उतार आए हैं

'जलील' मानिकपुरी

दे रहे हैं मय वो अपने हाथ से
अब ये शै इनकार के काबिल नहीं

भला तौबा का मयख़ाने में क्या ज़िक्र
जो है भी तो कहीं टूटी पड़ी है

मेरी तौबा भी कोई तौबा है
जब बहार आई तोड़ डाली है

---

१. विरक्त २. शराब विक्रेता का चमत्कार ३. शराब की बोतल

सच कहा था तूने जाहिद[1] कत्ले-क़ातिल[2] है शराब
हम भी कहते थे, यही जब तक बहार आई न थी

कुफ़्रे-जाहिद[3] तोड़ना क्या बात है
सिर्फ़ इक मय ही पिलाई जाएगी

बात साक़ी की न टाली जाएगी
तौबा करके तोड़ डाली जाएगी

मय की, मयख़ाने की, खुम[4] की, जाम की, मीना[5] की खै
मस्त आंखों का तअल्लुक़ एक पैमाना[6] है

वाइज़[7] छेड़ो न रिन्दों को[8] बहुत
ये समझ लो कि पिये बैठे हैं

मैंने पूछा था कि है मंज़िले-मक़सूद कहां
खिज़्र[9] ने राह बताई मुझे मयख़ाने की
मस्त कर देती है पहले ही निगाहे-साक़ी[10]
आख के सामने चलती नहीं पैमाने की[11]

---

१. विरक्त २. इन्द्रियों के ३. विरक्त की नास्तिकता ४. शराब का मट ५ सुराही ६. प्याला ७. धर्मोपदेशक ८. मद्यपों को ९. दीर्घ आयु वाला पैग़म्बर १०. साक़ी की नज़र ११. प्याले की

बेखुदी में[1] भी यही मुंह से निकलता है 'जलील'
शीशे[2] आबाद रहें खैर हो मयखाने की

मस्त करना है तो खुम[3] मुंह से लगा दे साक़ी
तू पिलायेगा कहां तक मुझे पैमाने से
पारसाई का बहुत करते थे इज़हार[4] 'जलील'
झूमते आज चले आते हैं मयखाने से

अदा-अदा तेरी मौजे-शराब[5] हो के रही
निगाहे-मस्त[6] से दुनिया खराब होके रही
'जलील' फ़स्ले-बहारी[7] की देखिए तासीर[8]
गिरी जो बूंद घटा से शराब हो के रही

मौसमे-गुल में[9] अजब रंग है मयखाने का
शीशा[10] झुकता है कि मुंह चूम ले पैमाने का[11]
मैं समझता हूं तेरी अरबदागरी को[12] साक़ी
काम करती है नज़र, नाम है पैमाने का

बू-ए-मय[13] पा के मैं चलता हूं मयखाने को
एक परी थी कि लगा ले गई दीवाने को

---

१. आत्मविसर्जन की स्थिति में २. बोतलें ३. शराब का मटका ४. प्रकटन ५. शराब की लहर ६. मस्त नज़र ७. वसन्त ऋतु ८. प्रभाव ९. वसन्त ऋतु में १०. बोतल ११. प्याले का १२. नाज़-नखरों को १३. शराब की महक

कोई ऐसी भी है सूरत तेरे दरके आने की
रख लूं मैं दिल में उठाकर तेरे मयखाने को

अब जाम पुराना है निगाहें हुए सागर[1]
रिन्दों को[2] नज़र लग गई साक़ी की नज़र को

'ज़ाहिद' अलहसन ज़ाहिद

मदिरो-दहर[1] के सताए हैं
इसलिए मयकदे में आए हैं

'जिगर' मुरादाबादी

ग़ज़लें

साक़ी की हर निगाह पे बल खा के पी गया
लहरों से खेलता हुआ लहरा के पी गया
बेकैफ़ियत[4] के कैफ़ से घबरा के पी गया
तौबा को तोड़-ताड़ के थर्रा के पी गया
ज़ाहिद[5] ! ये मेरी शोख़ी-ए-रिन्दाना[6] देखना
रहमत[7] को बातों-बातों में बहला के पी गया

---

१. प्याला २. मद्यपों की ३. काल चक्र ४. अनासक्ता ५. विरक्त
६. मद्यपों की चंचलता ७. सुरा

सरमस्ती-ए-अज़ल[1] मुझे जब याद आ गई
दुनिया-ए-एतिबार[2] को ठुकरा के पी गया
आज़ुर्दगी-ए-ख़ातिरे-साक़ी[3] को देखकर
मुझ को वो शर्म आई कि शर्मा के पी गया
ऐ रहमते-तमाम[4]! मेरी हर ख़ता मुआफ़
मैं इन्तिहा-ए-शौक़[5] में घबरा के पी गया
पीता बग़ैर इज़्न[6] ये कब थी मेरी मजाल
दर-पर्दा चश्मे-यार[7] की शह पा के पी गया
उस जाने-मयकदा[8] की क़सम बारहा 'जिगर'
कुल आलमे-बसीत पे मैं छा के पी गया

मिलती है उम्रे-अबद[9] इश्क़ के मयख़ाने में
ऐ अजल[10] तू भी समा जा मेरे पैमाने में
हरम-ओ-देर[11] में रिन्दों का[12] ठिकाना ही न था
वो तो यें कहिये अमां[13] मिल गई मयख़ाने में
आज तो कर दिया साक़ी ने मुझे मस्त-अलस्त
डाल कर ख़ास निगाहें मेरे पैमाने में
हजो-ए-मय ने[14] तेरा ऐ शैख़[15] भरम खोल दिया
तू तो मस्जिद में नीयत तेरी मयख़ाने में

---

१. आदिकालीन मतवालापन २. विश्वास की दुनिया ३. साक़ी की अप्रसन्नता ४. ख़ुदा ५. शौक़ की चरम सीमा ६. आज्ञा ७. मित्र (प्रेयसी) की आंख ८. मधुशाला की जान (साक़ी) ९. अन्तकाल तक का जीवन १०. मृत्यु ११. मस्जिद-मन्दिर १२. मद्यपों का १३. पनाह, शरण १४. शराब की बुराई करने १५. धर्मगुरु, मुल्ला

मशवरे होते हैं जो शैखो-बिरहमन में 'जिगर'
रिन्द सुन लेते हैं बैठे हुए मयख़ाने में

शे'र

पी के यक[1] जामे-शराबे-शौक़[2] आंखें खुल गईं
देखता हूं जिस तरफ़ मयख़ाना ही मयख़ाना है

मयख़ाना है उसी का, ये दुनिया उसी की है
जिस तश्ना-लब के[3] हाथ में जामे-शराब है
ऐ मोहतसिब[4]! न फेंक, मेरे मोहतसिब न फेंक
ज़ालिम ! शराब ! अरे ज़ालिम ! शराब है

मुझे उठाने को आया है वाइज़े-नादां[5]
जो उठ सके तो मेरा साग़रे-शराब[6] उठा
किधर से बर्क़[7] चमकती है देखें ऐ वाइज़
मैं अपना जाम उठाता हूं तू किताब[8] उठा

तौबा तो कर चुका था मगर इसका क्या इलाज
वाइज़ की ज़िद ने फिर मुझे मजबूर कर दिया

---

१. एक २. इच्छा रूपी शराब का प्याला ३. प्यासे होंठों वाले के ४. धर्माध्यक्ष ५. नादान धर्मोपदेशक ६. शराब का प्याला ७. बिजली ८. कुरान (तूर पर ख़ुदा से हुई मूसा की बातों की ओर संकेत है)

पहले शराब ज़ीस्त[1] थी अब ज़ीस्त है शराब
कोई पिला रहा है पिये जा रहा हूं मैं

इक जगह बैठ के पी लूं मेरा दस्तूर नहीं
मयकदा तंग बना दूं मुझे मन्ज़ूर नहीं

पीने वाले एक ही दो हों तो हों
मुफ़्त सारा मयकदा बदनाम है

शबाब[2] मयकश[3], जमाल[4] मयकश,
खयाल मयकश, निगाह मयकश
खबर वो रक्खेंगे क्या किसी की,
उन्हें खुद अपनी खबर नहीं है

साक़ी की चश्मे-मस्त का[5] क्या कीजिये बयां
इतना सरूर था कि मुझे भी सरूर था

ये मयकशी है तो फिर शाने-मयकशी क्या है
बहक न जाए जो पीकर, वो रिंद[6] ही क्या है

---

१. ज़िन्दगी २. यौवन ३. शराबी ४. सौन्दर्य ५. मस्त आंखों का
६. मद्यप

इक जाम आख़िरी तो पीना है और साक़ी
अब दस्ते-शौक़[1] कांपे या पांव लड़खड़ाएं

ग़र्क़ कर दे तुझको ज़ाहिद, तेरी दुनिया को ख़राब
कम से कम इतनी तो हर मयकश के पैमाने में है

मयकशो मुज़्दा[2] कि बाक़ी न रही क़ैदे-मकां[3]
आज इक मौज[4] बहा ले गई मयख़ाने को

तेरी चश्मे-मस्त[5] को क्या कहूं कि नज़र-नज़र है फ़ुसूं-फ़ुसूं[6]
ये तमाम होश, ये सब जुनूं,[7] उसी एक गर्दिशे जाम से
वही चश्मे-हूर[8] फड़क गई; अभी पी न थी कि बहक गई
कभी यक-ब-यक जो छलक गई किसी रिन्दे-मस्त के जाम से

ये ख़ानक़ाह नहीं पी भी जा तू ऐ ज़ाहिद !
ये मयकदा है यहां एहतिराज़[9] रहने दे

मैं तो जब मानूं मेरी तौबा के बाद
करके मजबूर पिला दे साक़ी

---

१. आकांक्षारूपी हाथ २. मुबारिक हो ३. जगह की कैद या सीमा ४. लहर ५. मस्त आंख ६. जादू-जादू ७. उन्माद ८. हूर की आंखें ९. बचना

'गुस्ताख़' रामपुरी

सदसाला[1] दौरे-चर्ख़[2] था सागर का एक जाम
निकले जो मयकदे से तो दुनिया बदल गई

ज़ुबेर रिज़वी

चाहते हैं रहे-मयख़ाना न क़दमों को मिले
लेकिन इस शोख़ी-ए-रफ़्तार[3] पे क़ाबू भी नहीं

'ज़ेब' उस्मानिया

रुबाई

तुमसे बढ़कर है कहीं उनका मुक़ाम[4] ऐ साक़ी
मस्त रहते हैं जो बेबादा-ओ-जाम[5] ऐ साक़ी
क़तरे-क़तरे को फिरें तेरे सुबूकश[6] लाचार
हैं ये किसके लिए ग़ैरत का मुक़ाम ऐ साक़ी

---

१. सौ वर्षीय २. कालचक्र ३. चाल की चपलता ४. स्थान
५. शराब तथा प्याले के बिना ६. शराब के मटके पी जाने वाले

'जोश' मलसियानी

ज़िन्दगी जिन से थी मैं है वे मौत' ने क्यों छी
आज भी कल्पना की कामना क्या आ

'जोश' मलीहाबादी

रुबाइयाँ

क्या शेख़' मिलेगा लग़्ज़िशे-मस्ताना' करके
क्या पाएगा तौहीने-जवानी' करके
तू आतिशे-दोज़ख़ से' डराता है उन्हें
जो आग को पी जाते हैं पानी करके

मरने पर नवेदे-जाँ' मिले न मिले
ये कुंज, ये बोस्ताँ,' मिले न मिले
पीने में कसर न छोड़ ऐ ख़ाना ख़राब
मालूम नहीं वहाँ मिले न मिले

---

१. धर्म गुरु या मुल्ला २. धर्म गुरु या मुल्ला ३. पुण्य कार्य (ज
४. जवानी का अपमान ५. नरक की आग से ६. जीवन की शुभ
या निमन्त्रण ७. उपवन, बाग़

इन मोतियों को रोल दिया साक़ी ने
सोने में मुझे तोल दिया, साक़ी ने
ये सुन के कि मिलता नहीं मक़्सूदे-हयात'
मयख़ाने का दर' खोल दिया साक़ी ने

आते नहीं जिनको चोर धंधे साक़ी
ओहदान पे' चुनते हैं वो फंदे साक़ी
जिस मय को छुड़ा न सका अल्लाह अबतक
उस मय को छुड़ा रहे हैं बन्दे साक़ी

ग़ालिब' है मेरा जज़्बा-ए-ग़ैरत' मुझ पर
इक क़हर' है नाक़सों' की सोहबत' मुझ पर
ज़ाहिद' मगर आज मय को जायज़ कर दे
इक क़तरा भी पी लूँ तो लानत मुझ पर

"जी हां, मस्जिद यहीं है आगे चल कर
हाजी 'ग़फ़्फ़ार' की दुकां के ऊपर"
"लेकिन लेकिन"....."जनाब लेकिन कैसी ?"
"मैं पूछ रहा था कि है मयख़ाना किधर ?"

---

१. जीवनोद्देश्य २. दरवाज़ा ३. पदों पे ४. छाया हुआ ५. आत्म-सम्मान ६. अन्याय, अत्याचार ७. मूर्खों की ८. [illegible] ९. विरक्त

बेलों में झलक रही हैं बूंदें साक़ी
खोशों से[1] टपक रही हैं बूंदें साक़ी
दे जाम कि बर्ग-हाए सब्ज़ो-तर पर[2]
रह-रह के खनक रही हैं बूंदें साक़ी

शे'र

ये सुन के हमने मयखाने में अपना नाम लिखवाया
जो मयकश लड़खड़ाता है वो बाज़ू थाम लेते हैं

अर्ज़ो-समा[3] को साग़रो-पैमाना कर दिया
रिन्दों ने[4] कायनात[5] को मयखाना कर दिया

कश्ती-ए-मय[6] को हुक्मे-रवानी[7] भी भेज दो
जब आग भेज दी है तो पानी भी भेज दो

'ज़ौक़'

ऐ 'ज़ौक़' देख दुख़्तरे-रज़[8] को न मुंह लगा
छुटती नहीं है मुंह से ये काफ़िर लगी हुई

---

१. गुच्छों से २. हरे और तर पत्तों पर ३. ज़मीन और आसमान
४. मयकशों ने ५. ब्रह्माण्ड ६. शराब की कश्ती ७. चलने का आदेश
८. अंगूर की बेटी (शराब)

ज़ाहिद[1] शराब पीने से काफ़िर हुआ मैं क्यों
क्या डेढ़ चुल्लू पानी में ईमान बह गया

रिन्दे-ख़राब हाल[2] को ज़ाहिद न छेड़ तू
तुझको पराई क्या पड़ी अपनी नबेड़ तू

हरम[3] को जाए ज़ाहिद हम तो मयख़ाने को चलते हैं
मुबारक उसको तौफ़े-काबा[4], हमको दौरे-साग़र[5] हो

बे बाद[6] गुलिस्तां में पीते हैं लहू मयकश
साक़ी ने दमे-इशरत[7] क्या देर लगाई है

दरवाज़ा मयकदे का न कर बन्द मोहतसिब[8]
ज़ालिम ख़ुदा से डर कि दरे-तौबा[9] बाज़ है[10]

'ज़ौक़' जो मदरिसे[11] के बिगड़े हुए हैं मुल्ला
उनको मयख़ाने में ले आओ, संवर जायेंगे

पिला मय आशकारा[12] हमको, किसकी साक़िया चोरी
ख़ुदा की जब नहीं चोरी तो फिर बन्दे की क्या चोरी

---

१. विरक्त २. दीन अवस्था वाले मद्यप को ३. का'बा ४. का'बे की परिक्रमा ५. प्याले की गर्दिश ६. हवा के बग़ैर ७. आनन्द के समय ८. रसाध्यक्ष ९. तौबा का दरवाज़ा १०. खुला ११. विद्यालय १२. खुलेआम

चश्मे-साक़ी[1] आ गई है याद फिर मयनोश[2] को
जाम छलका, शीशए-मय[3] हिचकियाँ लेने लगा

'ताबां' ग़ुलाम रब्बानी

मेरी सहबा-परस्ती[4] दुर्दे-इल्ज़ाम[5] है साक़ी
ख़िरद[6] वालों की महफ़िल में जुनूं[7] बदनाम है साक़ी
सूए-मंज़िल[8] बढ़े जाता हूं मयख़ाना ब मयख़ाना
मज़ाके-जुस्तजू[9] तश्नालबी[10] का नाम है साक़ी

भर आई आँख तो अक्सर किसी के नाम के साथ
मगर वो अश्क[11] जो छलका किये हैं जाम के साथ

बड़े अज़ाब में है जान बादाख़्वारों की[12]
कि ज़िक्रे-जाम[13] हुआ, दौरे-जाम[14] आ न सका

ख़राब जल्वा-ए-साक़ी, ख़राब जल्वा-ए-मय
बक़ैदे-होश[15] कोई मयकदे से जा न सका

---

१. साक़ी की आँख या नज़र २. मद्यप ३. शराब की बोतल ४. मदिरा-पूजन ५. इल्ज़ाम की भागी ६. बुद्धि ७. उन्माद ८. मंज़िल की ओर ९. तलाश की अभिरुचि १०. होंटों की प्यास (पिपासा) ११. अश्रु १२. मद्यपों की १३. प्याले की चर्चा १४. प्याले की गर्दिश १५. होश में

शे'र

मोहतसिब संगे-जफ़ा[1] तेरे, मयख़ाने में
कौन सा दिन था कि शीशे की तरह चूर न था

उठ गये शैख़ जी तुम मजलिसे-रिन्दां[2] से शिताब[3]
हम से कुछ ख़ूब मदारात[4] न होने पाई

साक़िया यां चल रहा है चल-चलाओ
जब तलक बस चल सके साग़र[5] चले

कभी ख़ुश भी किया है दिल किसी रिन्दे-शराबी का
भिड़ा दे मुंह से मुंह साक़ी हमारा और गुलाबी[6] का

तरदामनी पे[7] शैख़ हमारी न जाइए
दामन निचोड़ दें तो फ़रिश्ते वुज़ू करें

दे वो शराब साक़ी कि ता,रोज़े-रस्तख़ेज़[8]
जिसके नशे का काम न पहुंचे ख़ुमार तक

---

१. निष्ठुरता रूपी पत्थर २. शराबियों की महफ़िल ३. जल्दी ४. मेहमान नवाज़ी, आतिथ्य ५. शराब का प्याला ६. शराब की सुराही का ७. भीगे दामन पर ८. प्रलय के दिन तक

दे ले जो कुछ कि शीशे[1] में बाक़ी शराब हो
साक़ी है तंग अरसा-ए-फ़ुरसत[2] शिताब हो[3]

सल्तनत[4] पर नहीं है कुछ मौक़ूफ़[5]
जिस के हाथ आये जाम वो जम[6] है

साकी मेरे भी दिल की तरफ़ टुक निगाह कर
लब-तश्ना[7] तेरी बज़्म[8] में ये जाम रह गया

'दाग़' देहल्वी

ग़ज़ल

लग चली बादे-सबा[9] क्या किसी मस्ताने से
झूमती आज चली आती है मयख़ाने से
रूह किस मस्त की प्यासी गई मयख़ाने से
मय उड़ी जाती है साक़ी तेरे पैमाने से
गिर पड़ा हूं निगहे-मस्त[10] से चक्कर खा कर
साकिया पहले उठा तू मुझे पैमाने से

---

१. बोतल में २. फ़ुर्सत का समय ३. जल्दी हो ४. बादशाहत ५. आधारित ६. जम-जमशेद, ईरान का एक बादशाह जिनके पास संसार का सब कुछ था ७. प्यासा ८. महफ़िल ९. प्रभात समीर १०. मस्त नज़र

जब 'दाग़' को ढूंढा किसी मयख़ाने में पाया
घर में कभी उस मर्दे-ख़ुदा को नहीं देखा

मयख़ाने के क़रीब है मस्जिद भले को 'दाग़'
हर एक पूछता है कि "हज़रत इधर कहां ?"

लुत्फ़े-मय[1] तुझसे क्या कहूं ज़ाहिद
हाय, कमबख़्त ! तू ने पी ही नहीं

तक़सीर[2] मय-फ़रोश की[3] ऐ मुहतसिब[4] नहीं
ये चीज़ उड़ के जाती है मय-ख़्वार[5] की तरफ़

साक़िया तश्नगी[6] की ताब नहीं
ज़हर दे दे मगर शराब नहीं

मोहतसिब[7] तोड़ के शीशा[8] न बहा मुफ़्त शराब
अरे कमबख़्त छिड़क दे इसे मय-ख़्वारों पर

वाइज़ की बज़्मे-वा'ज़[9] में क्या भीड़-भाड़ थी
इतने में रिन्द[10] आए तो मैदान साफ़ था

---

१. शराब का आनन्द २. ग़लती ३. शराब बेचने वाले
.४ ५. शराब पीने वाला ६. प्यास ७. रसाध्यक्ष ८. बोत
१०. मद्यप

को तर्क-मय तो[1] माइले-पिंदार हो गया[2]
मैं तौबा करके और गुनहगार हो गया

ईमान कुछ वुज़ू तो नही है कि टूट जाए
ऐ शेख़[3] क्या हुआ जो मैं तौबा-शिकन[4] हुआ

हज़रते-ज़ाहिद[5] हर इक नश्शे को आदत शर्त है
मर न जायेंगे शरावे-चश्मा-ए कौसर से[6] आप ?

कभी झुकता हूं शीशे[7] पर कभी गिरता हूं साग़र पर[8]
मेरी वेहोशियों से होश साकी के बिखरते हैं

देखना पीरे-मुग़ा[9] हज़रते-ज़ाहिद[10] तो नही
कोई बैठा नज़र आता है पसे-ख़ुम[11] मुझको

भला हो पीरे-मुग़ा का, इधर निगाह मिले
फ़क़ीर हैं, कोई चुल्लू, ख़ुदा की राह मिले

---

१. शराब छोड़ी तो २. आत्मगौरव करने लगा ३. मुल्ला ४. शराब पीने की तौबा तोड़ने वाला ५. विरक्त महोदय ६. जन्नत में बहने वाली शराब से ७. बोतल ८. प्याले पर ९. मदिरा-विक्रेता १०. विरक्त महोदय ११. शराब के मटके के पीछे

एक मुद्दत में बहुत 'दाग़' बहक उट्ठे थे
सुनते हैं आज निकाले गए मयख़ाने से

ज़ौक़

कुछ शाने-मग़फ़रत[1] से नहीं दूर ज़ाहिदो[2]
डूबें गुनाह बादाकशों के[3] शराब में
ऐ शैख़[4] जो बनाये मय-ए-इश्क़ को हराम
ऐसे के दो लगाए भिगो कर शराब में

मय पी तो यहां तौबा भी हो जाएगी ज़ाहिद
कमबख़्त क़यामत अभी आई नहीं जाती

मय तो हलाल है जो पिये ढब से बादानोश
मैं तौबा कर के और पशेमान[5] हो गया

वाइज़ बड़ा मज़ा हो अगर यूं अज़ाब हो
दोज़ख़ में पांव, हाथ में जामे-शराब हो

साक़ी हमारे जाम में क्यों बाल पड़ गया
ऐसा न हो कि ग़ैर को जूठी शराब हो

---

१. ख़ुदा की शान २. विरक्तो ३. मद्यपों के ४. धर्म गुरु या मुल्ला
५. लज्जित

गले मिले हैं वो मस्ते-शबाब[1] बरसों में
हुआ है दिल को सरूरे-शराब[2] बरसों में
बचेंगे हज़रते-ज़ाहिद[3] कहीं बग़ैर पिये
हमारे हाथ लगे हैं जनाब बरसों में

दुख़्तरे-रज़[4] है बहुत तेज-मिजाज ऐ ज़ाहिद
तेरा क्या मुंह है—इसे भरते हैं भरने वाले

ज़ाहिद शराबे-नाब[5] की तासीर कुछ न पूछ
अक्सीर[6] है जो हल्क़[7] के नीचे उतर गई

हम बादानोश पांव न रक्खें बहिश्त में
जब तक हमारे सामने जामो-सबू[8] न हो

मयकशो ! हज़रते-ज़ाहिद की तलाशी लेना
कि छुपाए हुए वो जाम लिये जाते हैं

य फ़स्ल[9] अगर होगी तो हर रोज़ पियेंगे
हम मय से करें तौबा कि बरसात से तौबा
वो आई घटा झूम के ललचाने लगा दिल
वाइज़ को बुलाओ कि चली हाथ से तौबा

---

१. जवानी से मस्त २. शराब का नशा ३. विरक्त महोदय ४. अंगूर की बेटी (शराब) ५. शराब ६. रामबाण ७. कण्ठ ८. प्याला और सुराही ९. ऋतु

जब 'दाग़' को ढूँढा किसी मयख़ाने में पाया
घर में कभी उस मर्दे-ख़ुदा को नहीं देखा

मयख़ाने के क़रीब है मस्जिद भले को 'दाग़'
हर एक पूछता है कि "हज़रत इधर कहाँ ?"

लुत्फ़े-मय[1] तुझसे क्या कहूँ ज़ाहिद
हाय, कमबख़्त ! तू ने पी ही नहीं

तक़सीर[2] मय-फ़रोश की[3] ऐ मुहतसिब[4] नहीं
ये चीज़ उड़ के जाती है मय-ख़्वार[5] की तरफ़

साक़िया तश्नगी[6] की ताब नहीं
ज़हर दे दे मगर शराब नहीं

मोहतसिब[7] तोड़ के शीशा[8] न बहा मुफ़्त शराब
अरे कमबख़्त छिड़क दे इसे मय-ख़्वारों पर

वाइज़ की बज़्मे-वा'ज़[9] में क्या भीड़-भाड़ थी
इतने में रिन्द[10] आए तो मैदान साफ़ था

---

१. शराब का आनन्द २. ग़लती ३. शराब बेचने वाले की
४. रसाध्यक्ष ५. शराब पीने वाला ६. प्यास ७. रसाध्यक्ष ८. बोतल
९. उपदेश-सभा १०. मद्यप

को तर्क-मय तो[1] माइले-पिंदार हो गया[2]
मैं तौबा करके और गुनहगार हो गया

ईमान कुछ वुज़ू तो नहीं है कि टूट जाए
ऐ शेख़[3] क्या हुआ जो मैं तौबा-शिकन[4] हुआ

हज़रते-ज़ाहिद[5] हर इक नश्शे को आदत शर्त है
मर न जायेंगे शराबे-चश्मा-ए कौसर से[6] आप ?

कभी झुकता हूं शीशे[7] पर कभी गिरता हूं साग़र पर[8]
मेरी बेहोशियों से होश साक़ी के बिखरते हैं

देखना पीरे-मुगां[9] हज़रते-ज़ाहिद[10] तो नहीं
कोई बैठा नज़र आता है पसे-ख़ुम[11] मुझको

भला हो पीरे-मुगां का, इधर निगाह मिले
फ़क़ीर है, कोई चुल्लू, ख़ुदा की राह मिले

---

१. शराब छोड़ी तो २. आत्मगौरव करने लगा ३. मुल्ला ४. शराब पीने की तौबा तोड़ने वाला ५. विरक्त महोदय ६. जन्नत में बहने वाली शराब से ७. बोतल ८. प्याले पर ९. मदिरा-विक्रेता १०. विरक्त महोदय ११. शराब के मटके के पीछे

पूछिये मयकशों से लुत्फ़े-शराब
ये मज़ा पाकबाज़[1] क्या जाने

रिन्दाने-बे-रिया[2] की है सोहबत किसे नसीब
जाहिद भी हममें बैठ के इन्सान हो गया

मयख़्वार की निगाह ने हंगामे-मयकशी[3]
नश्तर चुभो दिया रगे-अब्रे-बहार में[4]

जाहिद शराब पीने दे मस्जिद में बैठ कर
या वो जगह बता दे जहां पर खुदा न हो

रोज पीते हैं सुबूही[5] भी अदा करके नमाज
फ़र्क आ जाए तो पाबन्दिये-औक़ात[6] ही क्या

हमें तो हज़रते-वाइज की जिद ने पिलवाई
यहां इरादा-ए-नोशे-मुदाम[7] किसका था

वाइज़ ! तेरे लिहाज से हम सुनके पी गये
क्या नागवार[8] ज़िक्रे शराबे तहूर[9] था

---

१. पारसा, परहेजगार २. निष्कपट मद्यप ३. मदिरा पान के हंगा(मे) ४. बसन्त के बादल की नसों में (वर्षा होने लगी) ५. सुबह पीने के लिए रात को बचाकर रखी हुई शराब ६. समय की पाबन्दी ७. शराब पीने का इरादा ८. अप्रिय ९. जन्नत की शराब का चर्चा

यूं तो बरसों न पिलाऊं न पियूं ऐ जाहिद
तौबा करते ही बदल जाती है नीयत मेरी

वो और हैं जो पीते हैं मौसम को देखकर
आती रही बहार में तौबा - शिकन[1] हवा

कल छुड़ा लगे पे[2] जाहिद ! आज तो साकी के हाथ
रहन इक चुल्लू पे हम ने हौज़े-क़ौसर[3] रख दिया

'दिल' शाहजहानपुरी

बहार जाम-ब-कफ़[4] झूमती हुई आई
शिकस्ते-तौबा न करते[5] तो और क्या करते

'नज्म' तबातबाई

अल्लाह रे साकी का बजिद हो के[6] पिलाना
कहता हूं मैं बस-बस तो वो कहता है नहीं और

---

१. तौबा को तोड़नेवाली २. पर ३. शराब से भरा हुआ जन्नत का तालाब ४. हाथ में शराब का प्याला लिए ५. तौबा को न तोड़ते ६. ज़िद करके

'नज़्म' नक़वी

अभी तो ऐ 'नज़्म' मयकदे में न जाने किस चीज़ की
हज़ार साग़र[1] छलक के छलके बुझा न एहसास तश

'नज़र' नौबतराय

कुछ बुरा ऐसा नहीं वाइज़ के मुंह से ज़िक्रे-मय
ज़हर मिल जाता है लेकिन तल्ख़ी-ए-गुफ़्तार से

'नज़ीर' अकबराबादी

दूर से आए थे साक़ी सुन के मयख़ाने का नाम
बस तरसते ही चले, अफ़सोस ! पैमाने को[5] हम

मय पी के जो गिरता है तो लेते हैं उसे थाम
नज़रों से गिरा जो उसे फिर किस ने संभाला

1. प्याले 2. प्यास 3. शराब की चर्चा 4. बातचीत की कटुता से 5.
के प्याले को

मय भी है, मीना[1] भी है, साग़र भी है, साक़ी नहीं
दिल में आता है लगा दें आग मयख़ाने में हम

ले, जाम लबालब भर देना, फिर साक़ी को कुछ ध्यान नहो
ये साग़र पहुंचे दोस्त तलक[2], या हाथ लपक ले दुश्मन का

पहले ही साग़र में थे, हम तो पड़े लोटते
इतने में साक़ी ने दी, उस से कड़ी और भी

साक़ी ने भर के जाम दिए सब को बज़्म में
सागर जो हमने मांगा, तो शीशा[3] हिला दिया

'नातिक़'

गदा-ए-मयकदा[4] था, अब हूं मैं शैख़-हरम[5] 'नातिक़'
कहीं ऐसा न हो पहचान ले कोई यहां मुझको

मयकशो, मय की कमो-बेशी पे नाहक़[6] जोश है
ये तो साक़ी जानता है, किसको कितना होश है

१. सुराही २. तक ३. बोतल ४. शराबख़ाने का फ़क़ीर या भिखारी
५. मस्जिद का मुल्ला ६. व्यर्थ

नासिख़

साक़ी बग़ैर मय[1] जो पिया आबे-आतशी
शो'ला वो बन के मेरे दहन[3] से निकल गया

तमन्ना है साक़ी, कभी बज़्मे-मय में
वो सरशार[5] हो और हुशियार मैं हूं

'निज़ाम' शाह रामपुरी

देना वो उस का साग़रे-मय[6] याद है 'निज़ा
मुंह फेर कर उधर को, इधर को बढ़ा के ह

'नशूर' वाहिदी

ये दिल की तश्नगी[7] है या नज़र की प्यास है
हर-इक बोतल, जो ख़ाली है, भरी मालूम होत

---

१. रात २. आग का पानी (शराब) ३. मुंह ४. शराब की म
५. नशे में ६. शराब का प्याला ७. प्यास

'नूर' बिजनौरी

क़तआ

सू-ए-मेहराबे-फ़लक[1] जाम उछाला हम ने
छुप गया चान्द तो खुर्शीद[2] निकाला हम ने
रुकते-रुकते भी सरे-अर्शे-बरीं[3] जा पहुंचे
गिरते-गिरते भी बहुत, खुद को संभाला हमने

'नूह' नारवी

मयकदे में कभी तौबा को जो आते देखा
एक दीवार खड़ी हो गई पैमानों की

आप हैं, हम हैं, मय है, साक़ी है
ये भी एक अमरे-इत्तेफ़ाक़ी[4] है
बे पिए नाम तक नहीं लेता
मुझ को ये एहतिरामे-साक़ी[5] है

हमेशा बादाख्वारों पर खुदा को मेह्रबां देखा
जहां बैठे घटा उट्ठी, जहां पहुंचे बहार आई

---

१. आकाश की मेहराब की ओर २. सूरज ३. सातवें आसमान पर ४. सयोग की बात ५. साक़ी का सम्मान

क्यों रिन्दी-यो-मग़नी में मतराग़ न मयख़ाना
बहता हुआ दरिया है, चलता हुआ पैमाना

परवेज़ शाहिदी

हद्दे-अदब' में लग़ि़ज़शे-पैमाना' क्यों रहे
दैर-ओ-हरम' के बीच में मयख़ाना क्यों रहे
जब मोहतसिब' ही बन गया साक़ी का दस्त-रास्त'
पाबंद हो के जुरअते-रिन्दाना' क्यों रहे
ये सिर्फ़ बिरहमन' से निभाते हैं दुश्मनी
रिन्दों के' साथ शैख़' का याराना क्यों रहे

'फ़ना' कानपुरी

कर लीजिए तौबा का यक़ीं हज़रते-वाइज़''
मयख़ाने को साक़ी की क़सम छोड़ दिया

---

१. आदर की सीमा २. प्याले का कंपकपाना ३. मन्दिर-म
काशी-का'बा) ४. रमाख़्वाब ५. दायाँ हाथ ६. मद्यपों का साहस ७.
८. मद्यपों के ९. धर्मगुरु, मुल्ला १०. धर्मोपदेशक महोदय

जब मेरे रास्ते में कोई मयकदा पड़ा
इक बार अपने ग़म की तरफ़ देखना पड़ा

'फ़ना' लखनवी

वो जाम हूं जो ख़ूने-तमन्ना से[1] भर चुका
ये मेरा ज़र्फ़[2] है कि छलकता नहीं हूं मैं

'फ़ानी' बदायूनी

दिल से पहुंची तो हैं आंखों से लहू की बूंदें
सिलसिला शीशे से[3] मिलता तो है पैमाने का[4]

चश्मे-साक़ी[5] कि थी कभी मख़मूर[6]
ख़ुद वही शराब हो के रही

---

१. अभिलाषा के खून से २. सामर्थ्य ३. बोतल से ४. प्याले का ५. साक़ी की आंखें (नज़रें) ६. शराबी

'फ़ारिग़' बुख़ारी

क़तए

देख कर आप की जवानी को
आरज़ूए - शराब[1] होती है
रोज़ तौबा को तोड़ता हूं मैं
रोज़ नीयत ख़राब होती है

क्या बात है इस ज़ुहद-ो-तक़द्दस[2] के तसद्दुक़[3]
मय भी जो मिली मुफ़्त की तो मुंह को न मोड़ा
मैं जानता हूं आप को ऐ हज़रते-वाइज़[4]
दाढ़ी के सिवा आप ने किस चीज़ को छोड़ा

क़तरा के मयकदे से न जाओ जनाबे-शेख़
रिन्दाने-नेकदिल से[5] रखो रस्मो-राह[6] भी—
माना कि नेकी करते पे बख़शिश का है मदार[7]
शायद कि काम आए करो कुछ गुनाह भी—

---

१. शराब की इच्छा २. संयम तथा पवित्रता ३. बलिहारी ४. धर्मउपदेशक (मुल्ला) ५. सदाचारी मनुष्यों से ६. मेल-जोल ७. आधार

शे'र

गर्दिशे-जाम ने[1] रंगीन बना रखा है
वर्ना बेरंग सा है गर्दिशे-अय्याम[2] का रंग

अजीब सा है ख़राबात के[3] फ़क़ीहों का[4] फ़त्वा[5]
भड़कते शो'लों से तपते दिलों की प्यास बुझाओ

वो भी हैं मेरी बादा-गुसारी[6] पे मो'तरिज़[7]
इन्सान के लहू से हैं लबरेज़[8] जिन के जाम

ख़ुदारा[9] कोई उनको राहे-मयकदा[10] पे डाल दे
जो जिन्दगी को ख़ुश्क रहगुज़ार[11] कहते आए हैं

वो ताक़ में धरी है सुराही शराब की
तौहीन हो रही है शबे-माहताब[12] की

यहां मुदाम[13] मयस्सर ही किसको होती है
कभी कभी का तो पीना कोई गुनाह नहीं

---

१. प्याले के चक्र ने २. कालचक्र ३. मधुशाला के ४. धर्मगुरुओं का ५. धर्माज्ञा ६. मदिरापान ७. आपत्तिकर्ता ८. परिपूर्ण ९. ख़ुदा के लिए १०. मधुशाला के रास्ते पर ११. रास्ता १२. चांदनी रात १३. सदा

होश आया तो जवानी की बहार आखिर
दरे-मयख़ाना पे' रिन्दों का' नशा टूट

हम तो कब से होश में आने की तदबीरें क
अपना नशा ही क्या कम है, क्यों जाते हैं मयख़ाने

गुनाह हम से, नशा जाम में, हमीं सब प
शराब पी के मजब भोज बन गए हो तुम

शराब पी के निखरता है यूं शबाब' तेरा
कि जैसे शे'र का मिसरा' कोई उठाता है'

दो घूंट पिला दे कोई मय हो कि हलाहल
वो तश्नालबी' है कि बदन टूट रहा है

इस रिन्द-सियह मस्त' का ईमान न पूछो
तश्ना'हो तो मखलूक'' है पी ले तो खुदा है

---

१. समाप्त २. मधुशाला के दरवाज़े पर ३. मद्यपों का
४. पंक्ति ५. शायर जब किसी अच्छे शे'र की पहला पंक्ति पढ़ता है
गया वह पंक्ति को दोहराते हैं ७. प्यास ८. काली करतूतों में मस्
९. प्यासा १०. जनसाधारण

इतना भी कौन होगा हलाक़-फ़रेबे-रंग[1]
दाव[2] उसने मय जो पी है तो मुझको नशा हुआ

'फ़िराक़' गोरखपुरी

आए थे हंसते-खेलते मयख़ाने में 'फ़िराक़'
जब पी चुके शराब तो संजीदा[3] हो गए

आंख भर आती है अकसर पिछले शब को[4], ए 'फ़िराक़'
वो ख़ुमारी चश्मे-साक़ी[5], वो भरे साग़र[6] नहा

अंगड़ाई सी लेती नज़र आई है ये दुनिया
साक़ी, तेरे मयख़ाने में जब सुब्ह हुई है

औरों को पिला जाम से बस मुझ को तो साक़ी
इक घूंट बस उसका कि जो आखों से खिंची है

छलकी पड़ती है मय-ए-नाब, रिसे जाते हैं हाथ
ख़ैर साक़ी तेरे चटके हुए पैमाने की

---

१. रंग अथवा स्थिति के फ़रेब द्वारा वधित २. रात ३. गंभीर ४. रात पिछले पहर को ५. साक़ी की आखों की ख़ुमारी ६ प्याले

बज़्मे-मय है[1] कि सियाहख़ाना[2] तुझ बिन साक़ी
मौजे-बादा[3] है कि दर्द उठता है पैमानों में

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'

क़तआ

ढलती है मौजे-मय की तरह रात इन दिनों
खिलती है सुब्ह गुल की तरह रंगो-बू से पुर
वीरां है जाम, पास[5] करो कुछ बहार का
दिल आरज़ू से पुर करो, आंखें लहू से पुर

शे'र

वीरां है मयकदा, ख़ुमो-साग़र[6] उदास हैं
तुम क्या गए कि रूठ गए दिन बहार के

न गुल खिले हैं, न उनसे मिले, न मय पी है
अजीब रंग में अब के बहार गुज़री है

ोहतसिब की ख़ैर ऊंचा है उसी के फ़ैज़[8] से
रेन्द[9] का, साक़ी का, मय का, ख़ुम का, पैमाने का नाम

---

१. शराब की महफ़िल २. अंधेरा घर ३. शराब की लहर ४. शराब की ५. सत्कार ६. शराब के मटके और प्याले ७. धर्माध्यक्ष ८. कृपा ९. मद्यप

खर दोज़ख़ में मय मिले न मिले
शैख़[1] साहब से जां तो छूटेगी

रक़्से-मय[2] तेज़ करो, साज़ की लय तेज़ करो
सू-ए-मयख़ाना[3] सफ़ीराने-हरम[4] आते हैं

आए कुछ अब्र[5] कुछ शराब आए
उसके बाद आए जो अज़ाब[6] आए

बशीर 'बद्र'

कहो यारो, डुबो दें कुफ़्रो-ईमां[7]
अभी साग़र में इतनी बच रही है

ज़िन्दगी को कभी आलूदा-ए-साग़र[8] न करूं
मैं तेरे ग़म को अगर भूल सकूं आपसे आप

तो शायर, पैयम्बर[9] में पहचान क्या हो
अगर लग़्ज़िशे-मयकशा[10] आ न जाए

---

१. धर्मगुरु (मुल्ला) २. शराब का नृत्य ३ मधुशाला की ओर ४. का'बे की ओर आनेवाले यात्री ५. बादल ६. मुसीबत ७. कुफ़्र और ईमान ८. शराब के प्याले से दूषित ९. पैग़म्बर १०. शराबियों की सी लड़खड़ाहट

वो कैफ़[1] हो, नशा हो, मुरव्वत कि मुहब्बत
साक़ी तेरी आंखों में कोई चीज छुपी है

ये कोई खानक़ाह[2] है यारो
इस तरह मयकदा नहीं होता

मेरी तबाही का इलजाम अब शराब पे है
मैं और करता भी क्या तुम पे आ रही थी बात

'वासित' निस्वानी

साक़िया अक्स[3] पड़ा है जो तेरी आंखों का
और दो जाम नज़र आते हैं पैमाने में

'बेखुद' देहल्वी

'बेखुदे'-मयख्वार'[4] की देखी शरारत तूने शैख़[5]
सुबह को मस्जिद से निकला शब को[6] मयखाने में था

---

१. आनन्द २. दरवेशखाना ३. प्रतिबिम्ब, छाया ४. शराबी 'बेखुद'
५. मुल्ला ६. रात को

'बेताब' अज़ीमाबादी

असर न पूछिये साक़ी की मस्त आंखों का
य देखिये कि कोई होशियार बाक़ी है

'बेदार' देहल्वी

आज साक़ी देख तो क्या है अजब रंगीं[1] हवा
सुर्ख़ मय, काली घटा और सब्ज़ है मीना[2] का रंग

'बेदिल' अज़ीमाबादी

अपने हाथों से दिया यार ने मीना[3] मुझको
रुख़सत[4] ऐ तौबा कि लाज़िम[5] हुआ पीना मुझको

---

१. रंगीन २. शराब की सुराही ३. शराब की मटकी ४. वि
५. आवश्यक

मोहतसिब[1] ! साक़ी ...
मयकदे का दर[2] खुला, गर्दिश में जा

निगाहे-साक़ी-ए-नामेहरबां[4] ये क
कि टूट जाते हैं ख़ुद दिल के सा
हयात[5], सञ्जिदे-पैहम[6] का नाम
लबों से[7] जाम लगा भी सकूं, ख़ु

मुझे ये फ़िक्र सब की प्यास अपनी प्य
तुझे ये ज़िद कि ख़ाली है मेरा पैमान

बन गई है मस्ती में दिल की बात
क़तरा थी जो सागर में[9] लब पे आके

शराब हो ही गई है बक़द्रे-पैम
ब-अज़्मे-तर्क[11] निचोड़ा जो आस्तीनं

१.रसाध्यक्ष २. अधखुली आंख ३. मधुश
४. अकृपालु साक़ी की नज़र ५. जीवन ६. निर
७. होंटों से ८. प्याला ९. प्याले में १०. प्याले जि
छोड़ने के संकल्प से

हरम से[1] मयकदे तक मंज़िले-यक-उम्र[2] थी साक़ी
सहारा गर न देती लग़्ज़िशे-पैहम[3] तो क्या करते

ये महफ़िल अहले-दिल[4] है यहां हम सब मयकश हम सब साक़ी
तफ़रीक़[5] करें इन्सानों में इस बज़्म[6] का ये दस्तूर नहीं

मैं तो जब मानूं कि भर दे साग़रे-हर-ख़ास-ओ-आम[7]
यूं तो जो आया वही पीरे-मुग़ां[8] बनता गया

महो-ख़ुरशीद[9] भी साग़र-ब-कफ़[10] होकर उतर आए
ब-वक़्ते-बादानोशी[11] जब निचोड़ी आस्तीं मैं ने

'मजाज़' लखनवी

साक़ी

मेरी मस्ती में भी अब होश ही का तौर[12] है साक़ी
तेरे साग़र में ये सहबा[13] नहीं कुछ और है साक़ी

---

१. काबे या मस्जिद से २. आयु-भर का सफर ३. निरन्तर लड़-खड़ाहट ४. दिल वालों की ५. अन्तर ६. महफिल ७. छोटे बड़े सबका प्याला ८. मधुशाला का मालिक ९. चान्द-सूरज १०. हाथ में शराब का प्याला लिये ११. मदिरा-पान के समय १२. रंग-ढंग १३. अंगूरी शराब

भड़कती जा रही है दम ब दम इक आग सी दिल
ये कैसे जाम हैं साक़ी, ये कैसा दौर है साक़
पी दे जिससे नींद आ जाए अक़्ले-फ़ित्ना-परवर को
कि दिल आशुफ़्तह्-रम्ज़े-लुत्फ़ो-जोर' है साक़
जवानी और यूं घिर आए तूफ़ाने-हवादिस में
ख़ुदा रक्खे अभी तो बेख़ुदी का दौर है साक़
छलकती है जो तेरे जाम से उस मय का क्या कहन
तेरे शादाब होंटों की मगर कुछ और है साक़
मुझे पीने दे, पीने दे कि तेरे जामे - ला'लीं में
अभी कुछ और है, कुछ और है, कुछ और है साक़

मुझे साग़र' दोबारा मिल गया है
तलातुम' में किनारा मिल गया है
मेरी बादापरस्ती' पर न जाओ
जवानी को सहारा मिल गया है

भला सा नाम है उसका उसे कहते हैं क्या ज़ाहि
सुराही में जो ढलती है जो पैमाने में होती

१. उपद्रव खड़े करने वाली बुद्धि को २. अनुकम्पा और चार के भेद से अनभिज्ञ ३. दुर्घटनाओं के तूफ़ान में ४. लाल प्याले (होंठों) में ५. प्याला ६. तूफ़ान ७. मदिरा की पूजा(पान) ८. विरक्त या पारसा

हाए वो वक़्त कि जब बेपिये मदहोशी थी
हाए ये वक़्त कि अब पीके भी मख़्मूर नहीं

उस महफ़िले-कैफ़ो-मस्ती में[1], उस अंजुमने-इर्फ़ानी में[2]
सब जाम-ब-कफ़[3] बैठे ही रहे, हम पी भी गए छलका भी गए

अपनी इन मख़मूर आंखों की क़सम
मेरी मयख़्वारी[4] अभी तक राज़[5] है

मय-ए-गुलफ़ाम[6] भी है, साज़े-इश्रत[7] भी है, साक़ी भी
मगर मुश्किल है आशोबे-हक़ीक़त[8] से गुज़र जाना

आलमे-यास में[9] क्या चीज़ है इक साग़रे-मय[10]
दश्ते-ज़ुल्मात में[11] जिस तरह ख़िज़र[12] की क़दील[13]

वाइज़ो-शैख़ ने सर जोड़ के बदनाम किया
वर्ना बदनाम न होती मय-ए-गुलफ़ाम[14] अभी

---

१. आनन्द और मस्ती की सभा में २. ब्रह्मज्ञान की गोष्ठी में ३. हाथ में प्याला लिए ४. मदिरापान ५. रहस्य ६. गुलाबी रंग की शराब ७. आनन्द का साज ८. वास्तविकता की चुभन या विप्लव ९. निराशा की हालत में १०. शराब का प्याला ११. अंधेरे के मरुस्थल में १२. एक दीर्घायु पैग़म्बर या पथ-प्रदर्शक १३. मशाल (काग़ज़ या अबरक से मढ़ा हुआ फ़ानूस) १४. गुलाबी रंग की शराब

'मन्ज़र' सलीम

शराबखाना

शराबख़ाने में बैठा हूं सोचने के लिए
न जाने कितने ख़यालों का राज़दां बनकर
न जाने कितनी हदों से गुज़रता जाता हूं

मगर हदों से गुज़रकर फ़रेब खाता हूं
ये हदें तो फिर आ जायेंगी कहीं न कहीं
नज़र की राह में दीवारे-आस्मां[1] बनकर

फ़रेब खाना बड़ी बात तो नहीं लेकिन
ये चन्द लम्हों की[2] दीवानगी ही क्या कम है
ये चन्द लम्हे जो आते हैं मेहमां बनकर

शराबख़ाने में बैठा हूं सोचने के लिए
न जाने कितने ख़यालों का राज़दां बनकर
न जाने कितने ख़यालों से पूछता हूं मैं

ये दर्द क्या है यूं जिस में मुब्तिला[3] हूं मैं
ये कैसा ग़म मेरे दिल को जलाए जाता है
कभी शरारे-जहन्नुम[4], कभी धुआं बन कर

---

१. आकाश रूपी दीवार २. क्षणों की ३. ग्रस्त ४. नरक की आग

न जाने शामो-सहर[1] के निगारखाने से[2]
ये तीर कौन मेरी सम्त[3] फेंक देता है
मेरे तड़पते हुए दिल का पासबां[4] बनकर

मगर खयाल कभी बोलते हैं ऐसे में !
कहां से आएगी आवाज़ कौन बोलेगा
बग़ैर जाने हुए राज़ कौन खोलेगा ।

ये चन्द लम्हे जो आते हैं मेहमां बनकर
कहीं ये रूठ न जाएं कि मैं अकेला हूं
हर इक लम्हे की आमद[5] पे उठ न पाऊंगा

शराब खत्म हुई जा रही है रात आई
ज़माने भर की निगाहों का बार[6] उठाए हुए
यहां से उठ के कहां और कैसे जाऊंगा

'मयकश' अकबराबादी

ये बात हज़रते-वाइज़[7] से सीख ऐ मयकश[8]
कोई सुने न सुने आदमी कहे जाए

१. सुबह-शाम २. चित्रालय से ३. ओर ४. रक्षक ५. आगमन
६. बोझ ७. धर्मोपदेशक महोदय ८. मद्यप

'महरूम' तिलोकचन्द

पड़ी जो हम पे नज़र मयकदे में[1] वाइज़[2] की
वहीं सुराही उठा के चला वुज़ू के लिए

कहीं न बादा-कशों के[3] ये दिल हों ऐ साक़ी
जो मयकदे में पड़े हैं शिकस्ता[4] पैमाने

'माईल' देहल्वी

लड़ते हैं जा के बाहर ये शेख़ और बिरहमन
पीते हैं मयकदे में साग़र[5] बदल बदल कर

'माहिर'-उल-क़ादरी

इक दूसरी बोतल आने तक, ये दुर्द-तहे-साग़र[6] ही सह
ओ तश्ना-ए-मय[7]! बेताब न हो, साक़ी को नदामत होती

---

१. मधुशाला में २. धर्मोपदेशक (मुल्ला) ३. मद्यपों के ४. टू
हुए ५. प्याले ६. प्याले की तलछट ७. शराब के प्यासे

ये सुराही ये फ़रोग़े-मय-ए-गुल-रंग[1], ये जाम
चश्मे-साक़ी की[2] इनायत के सिवा कुछ भी नहीं

कितनी कैफ़-आवर[3] थी साग़र की खनक
आँख साक़ी की झपक कर रह गई

मीर तक़ी 'मीर'

या हाथों हाथ लो मुझे मानिन्दे-जामे-मय[4]
या मेरे साथ-साथ चलो मैं नशे में हूँ

'मीर' उन नीमबाज़[5] आँखों में
सारी मस्ती शराब की सी है

ले के ख़ुद पीरे-मुग़ां[6] हाथ में मीना[7] आया
मयकशो[8] शर्म ! कि इस पर भी न पीना आया

---

१. गुलाबी रंग की शराब की चमक २. साक़ी की नज़रों क
३. आनन्ददायक ४. शराब के प्याले की तरह ५. अधखुली ६. मदिरा
विक्रेता ७. सुराही ८. मद्यपो

ख़राब रहते थे मस्जिद के आगे मयख़ाने
निगाहे-मस्त[1] ने साक़ी की इन्तिक़ाम[2] लिया

गिरया-ए-शब से[3] सुर्ख़ हैं आंखें
मुझ बलानोश को[4] शराब कहां

अब्र[5] उठा था काबे से और झूम पड़ा मयख़ाने पर
बादाकशों का[6] झुरमट होगा शीशे[7] और पैमाने पर

तुझ को मस्जिद है मुझ को मयख़ाना
वाइज़ा[8], अपनी-अपनी क़िस्मत है

मस्ती में लग़्ज़िश[9] हो गई मा'ज़ूर[10] रक्खा चाहिए
ऐ अहले-मस्जिद[11] ! इस तरफ़ आया हूं मैं भटका हुआ

अब तो जाते हैं मयकदे से 'मीर'
फिर मिलेंगे अगर ख़ुदा लाया

---

१. मस्त नज़र २. बदला ३. रात-भर रोने के कारण ४. बेतहा
पीने वाले के लिए ५. बादल ६. मद्यपों का ७. बोतल ८. ऐ ध
उपदेशक (मुल्ला) ९. लड़खड़ाहट (ग़लती) १०. असमर्थ, यहां स
११. मस्जिद वालो

'मुबारिक' अज़ीमाबादी

तू तो ज़ाहिद[1] मुझे कहता है कि तौबा कर ले
क्या कहूँगा जो कहेगा कोई पीना होगा

'मुल्ला' आनन्द नारायण

मय[2] सब को न हो तक़सीम[3] अगर, अपना भी उलट दे पैमाना[4]
ये कुफ्र है कैशे-रिन्दी में[5] साक़ी से अकेले जाम न ले

निज़ामे-मयकदा[6] साक़ी बदलने की ज़रूरत है
हज़ारों हैं सफ़ें[7] जिन में न मय आई न जाम आया

मयकशों ने पी के तोड़े जामे-मय
हाए वो साग़र जो रक्खे रह गए

वो कौन हैं जिन्हें तौबा की मिल गई फ़ुर्सत
हमें तो गुनाह भी करने को ज़िन्दगी कम है

---

१. विरक्त, पारसा २. शराब ३. बटे ४. प्याला ५. मद्यपों के नियम या धर्म में ६. मधुशाला की व्यवस्था ७. पंक्तियाँ

ये बज़्मे-दैरो-का'बा[1] है नहीं कुछ सहने-मयख़ाना[2]
ज़रा आवाज़ गूंजो और पहचानी नहीं जाती

ख़ाली है मेरा साग़र तो रहे साक़ी को इशारा कौन करे
ख़ुद्दारी-ए-साइल[3] भी तो है कुछ, हर बार तक़ाज़ा कौन करे

साक़िया जब मय हर इक मैकश की क़िस्मत में नहीं
सबको इस महफ़िल में पैमाने अता[4] क्यों हो गए

अंदर अक्सर जहां दैरो - हरम[5] के पाए जाते हैं
वहीं देखा गया है, मयकदा आबाद होता है

मुस्तुफ़ा ज़ैदी

सहबा-ए-तुन्दो-तेज़[6] की हिद्दत[7] को क्या ख़बर
शीशे[8] से पूछिये जो मज़ा टूटने में था

---

१. पुजारियों और मुल्लाओं की महफ़िल २. मधुशाला आंगण ३. मांगने वाले का आत्मसम्मान ४. प्रदान ५. मन्दिर मस्जिद ६. तीखी और तेज़ ७. गर्मी ८. बोतल

'मुसव्विर' कांजोरी

अपना ईमां[1] रहने-मय[2] करता हूं मैं
मुफ़्त क्यों देता है साक़ी दाम ले

'मुसहफ़ी'

शीशा-ए-मय[3] की तरह ऐ साक़ी
छेड़ मत हम भी भरे बैठे हैं

मैं अदा उसकी कहूं क्या मेरे मयनोश[4] ने रात
सर पे साक़ी के किस अंदाज़ से साग़र मारा

'मोमिन'

लबे-मयगूं पे[5] जान देते हैं
हमें शौक़े-शराब ने मारा

---

१. ईमान २. शराब के लिए गिरवी ३. शराब की बोतल
४. मद्यप ५. शराब से तर होंठों पर

ज़िक्र-शराबो-हूर कलामे-खुदा[1] में देख
'मोमिन' मैं क्या कहूं मुझे क्या याद आ गया

यूसुफ़ जमाल अनसारी

यकगूना[2] बेखुदी[3] भी कहां है शराब में*
सदियों के ग़म हैं तल्ख़ी-ए-सहबा-ए-नाज़ में[4]
पीता हूं मैं तो आप में आने के वास्ते
कम ज़र्फ़[5] नश्शा ढूंड रहे हैं शराब में

रत्रना जग्गी

साक़ी को शर्म, पासे-सुबू[6], जाम का लिहाज
आदाबे-मयकदा[7] भी हैं कुछ मयकशी[8] के साथ

---

१. कुरान २. एक प्रकार की ३. आत्म-विसर्जन ४. नाज़ों-भरी शराब की कड़वाहट या तेज़ी में ५. हल्के लोग ६. सुराही का आद ७. मधुशाला के शिष्टाचार ८. मदिरा-पान

*मय से गरज़ निशात है किस रू-सियाह को
इक गूना बेखुदी मुझे दिन-रात चाहिये —ग़ालि

राजा महदी अली खां

दो शराबी

पहला शराबी : ज़माना गर्दिश में झूमता है,
नशे निगाहों को आ रहे हैं
वो हाथ ज़िन्दा रहें खुदाया,
जो मुझको ह्विस्की पिला रहे हैं

दूसरा शराबी : जनाब क्या आप होश में हैं?
अगर है ऐसा तो और लीजे
शराबख़ाने में आए हैं तो
ख़ुदी[1] को ग़र्क़-शराब[2] कीजे

पहला शराबी : नशा बहुत हो गया है साहब,
न और दीजे शराब मुझको
कि इक बड़ा सांप लग रहा है,
ये लम्बा-लम्बा कबाब मुझको

दूसरा शराबी : कबाब तो बेहतरीन मिलते हैं
शाम को मेरे घर के आगे
और ऐसे ख़स्ता कि टूट जायें
अगर न लिपटे हों उन पे धागे

पहला : पता जनाब अपने घर का इस
ख़ाकसार को भी बताइयेगा

---

२. शराब में ग़र्क़

दूसरा : ये कार्ड मेरा है भाई साहब,
: ज़रूर तशरीफ़ लाइयेगा

पहला : अठारह नम्बर ? निज़ाम मंज़िल ?
: ये मेरे घर का पता है साहब

दूसरा : मंगा दूं टैक्सी, बहुत नशा
आप को अगर हो गया है साहब

पहला : नशे में कोई भी अपने घर का
पता नहीं भूलता है मिस्टर

दूसरा : बहुत सी पी ले तो मां-बहन तक
को विलयक़ीं[1] भूलता है मिस्टर

पहला : मेरे मुकर्रम[2] ! यक़ीन कर लो—
बहक गए हो नशे में गुम हो

दूसरा : तो गोया 'फ़रहत' के नाम पर जो
मकां है उसके मकीन[3] तुम हो

पहला : क़सम ख़ुदा की, उठारह नम्बर
: निज़ाम मंज़िल, मेरा मकां है

दूसरा : किराया देती है उसका 'फ़रहत'
तू कह रहा है तेरा मकां है

पहला : नशे में कहता हूं साफ़ तुमसे,
बहुत है 'फ़रहत' को प्यार मुझसे

---

१. अवश्य ही २. आदरणीय ३. वासी

'रियाज़' खैराबादी

रुबाइयां, क़'तए, ग़ज़लें और शे'र

आए हमारे आगे वो साग़र शराब का
साक़ी ने जिसमें रंग भरा हो शबाब[1] का
रहमत[2] को ये अदा मेरी शायद पसन्द आए
डर-डर के कांप-कांप के पीना शराब का

ऐ शैख वो का'बा हो या हो दरे-मयखाना[3]
तू ने मुझे जब देखा, सिजदे में ही सर देखा
का'बे में[4] नज़र आए जो सुबह अज़ां[5] देते
मयखाने में रातों को उनका भी गुज़र देखा

मैं समझा जब छलकता सामने जामे-शराब आया
मेरा मुंह चूमने शायद मेरा मस्ते-शबाब[6] आया
निराले हैं यही दुनिया में तौबा तोड़ने वाले
इधर साक़ी 'रियाज़' आए उधर जामे-शराब आया

---

१ जवानी २. खुदा ३. मधुशाला का दरवाज़ा या दहलीज
४. मस्जिद में ५. अज़ान, बांग ६. जवानी से मस्त (प्रेयसी)

'रियाज़' खैराबादी

रुबाइयां, क़ 'तए, ग़ज़लें और शे'र

आए हमारे आगे वो साग़र शराब का
साक़ी ने जिसमें रंग भरा हो शबाब[1] का
रहमत[2] को ये अदा मेरी शायद पसन्द आए
डर-डर के कांप-कांप के पीना शराब का

ऐ शेख वो का'बा हो या हो दरे-मयखाना[3]
तू ने मुझे जब देखा, सिजदे में ही सर देखा
का'बे में[4] नज़र आए जो सुबह अज़ां[5] देते
मयखाने में रातों को उनका भी गुज़र देखा

मैं समझा जब छलकता सामने जामे-शराब आया
मेरा मुह चूमने शायद मेरा मस्ते-शबाब[6] आया
निराले हैं यही दुनिया में तौबा तोड़ने वाले
इधर साक़ी 'रियाज़' आए उधर जामे-शराब आया

---

१. जवानी २. खुदा ३. मधुशाला का दरवाज़ा या दहलीज़
४. मस्जिद में ५. अज़ान, बांग ६. जवानी से मस्त (प्रेयसी)

हरम[1] की तरह नहीं मयकदे में बेदारी[2]
सिवा हमारे यहां एक होशियार नहीं
जनाबे-शेख़ ने[3] जब पी तो मुंह बना के कहा
मज़ा भी तल्ख़[4] है कुछ बू भी खुशगवार[5] नहीं

मुंह बनाना है बुरा क्यों वक़्ते-वाज़[6]
आज वाइज़ तू ने पी अच्छी नहीं
बुत-कदे से[7] मयकदा अच्छा मेरा
बेखुदी[8] अच्छी, खुदी[9] अच्छी नहीं

शररे-तूर[10] है जो मौज[11] है पैमाने में
बिजलियां कौंदती हैं आज तो मयखाने में
दे दे तू मेरी जवानी तेरे सदक़े साक़ी
है वही तेरे छलकते हुए पैमाने में

फ़र्दा की फ़िक्र[12] रखते नहीं मयकदे के लोग
जो कुछ हो हश्र[13] कल के लिए कुछ भी तै नहीं

---

१. मस्जिद २. जागरण ३. धर्मगुरु महोदय ने ४. तेज, क
प्रिय ६. धर्मोपदेश के समय ७. मन्दिर से ८. आत्मविस
वहं १०. तूर नामक पहाड़ पर की बिजली (जिसके
रत मूसा को दैवी संकेत मिले थे) ११. लहर १२. आनेवाले
परिणाम

खल्वत में[1] पी के जहर उगलते हैं बज़्म में[2]
क्या है अगर ये हज़रते - वाइज़ की कै नहीं

जवां कर दे इलाही सोहबते - पीरे - मुग़ां[3] मुझको
पुराने मयकदे वाले भी जानें नौजवां मुझको
शराब उड़ती रहे तो भी घटा छाई रहे यूं ही
न देखे आस्मां तुझको न देखे आस्मां मुझको
बड़ी मौक़े से थी हर चन्द वो जन्नत से बाहर थी
हरम[4] से हट के रस्ते में मिली मय की दुकां मुझको

मैं बुला लूंगा तुझे शेख[5] तेरे सर को क़सम
मेरे घर आज किसी तरह उधार आए त
तौबा लब पर[6] न सही, हाथ में बोतल ही सह
महफिले - वा'ज़[7] में कुछ बादा-गुसार[8] आए त
लेंगे आंखों से क़दम दौड़ के सब अहले - हरम
दरे - साक़ी से[10] कोई सिजदा - गुसार[11] आए

---

१. एकान्त में २. महफिल में ३. बूढ़े मदिरा-वि
की सगत ४. मस्जिद ५. धर्मगुरु (मुल्ला) ६. होठ
७. धर्मोपदेश की सभा ८. मद्यप ९. मस्जिदवाले १०. [illegible]
की चौखट से ११. सिजदा करने वाला

कुछ भी चले न काम बुढ़ापे में ऐ 'रियाज़'
उठ कर ये मौजे - मय[1] जो हमारा असा[2] न हो

काबा-ओ-दैर में[3] होती है परस्तिश[4] किसकी
मयपरस्तो[5]! ये कोई नाम हैं मयख़ानों के
जामे-मय[6] तौबा-शिकन[7]! तौबा मेरी जाम-शिकन
सामने ढेर है टूटे हुए पैमानों के

रात दिन बज़्म में[8] दौरे - मय - ए - गुलफ़ाम[9] चले
ज़ोर तुझ पे जो मेरा गर्दिशे-अय्याम[10] चले
काटे कटती नहीं मुझ मस्त से बरसात की रात
मयकदे वाला मिले आज तो कुछ काम चले
चश्मे-साग़र[11] ने भी हसरत से निगाहें डालीं
जब बचाए हुए हम जामा - ए - अहराम[12] चले
हम फ़क़ीरों का ख़ाली न रहे चुल्लू साक़ी
हम ग़रीबों का भी अल्लाह करे काम चले

---

१. शराब की लहर २. सहारे की लाठी या लकड़ी ३. काबे और काशी में ४. पूजा ५. शराब के पुजारियो ६. शराब का प्याला ७. तौबा को तोड़ने वाला ८. महफ़िल मे ९. गुलाबी शराब का दौर १०. कालचक्र ११. प्याले की आंखें १२. हज का लिबास

सलामत मयकदा या रब सलामत पीरे-मयख
हरम[2] में हूं मेरी आंखों में है तस्वीरे-मया
तुझे जाना भी है जन्नत में ऐ वाइज जवां ह
जो आया है तो देखे जा जरा तासीरे-मयख
रहे-दैरो-हरम[4] जो कोई भूला वो यहीं प
न भूला रास्ता कोई कभी रहगीरे-मयख
कहें हम क्या हमारा मयकदा वाबस्ता[6] है कि
मिली है अर्श को[7] जंजीर से जंजीरे-मयख

क्या हुई मेरी जवानी जोश पर आई हुई
हाए वो नाजुक गुलाबी मेरी छलकाई हुई
नाम है मय, युहीं तल्खी नहीं, तेजी नहीं
मुद्दतों जाहिद[8] ने पी है मेरी खिंचवाई हुई

सौ बोतलें चढ़ाऊं तो नश्शा जरा न हो
पानी है ये शराब, जो काली घटा न हो
तौबा के तोड़ने में भी आता नहो है लुत्फ़
जब तक शरीके-बादा[9] कोई पारसा न हो

१. मधुशाला का मालिक २. मस्जिद ३. मधुशाला का प्र
कमाल ४. मन्दिर तथा मस्जिद की राह ५. मधुशाला को
सा राहगीर ६. सम्बन्धित ७. सातवें आकाश की ८. विर
पारसा ९. मदिरापान का सहयोगी

कुछ भी चले न काम बुढ़ापे में ऐ 'रियाज़'
उठ कर ये मौजे - मय[1] जो हमारा असा[2] न हो

काबा-ओ-दैर में[3] होती है परस्तिश[4] किसकी
मयपरस्तो[5]! ये कोई नाम हैं मयखानों के
जामे-मय[6] तौबा-शिकन[7]! तौबा मेरी जाम-शिकन
सामने ढेर है टूटे हुए पैमानो के

रात दिन बज़्म में[8] दौरे - मय - ए - गुलफ़ाम[9] चले
और तुम वे जो मेरा गर्दिशे-अय्याम[10] चले
काटे कटती नहीं मुझ मस्त से बरसात की रात
मयकदे वाला मिले आज तो कुछ काम चले
चश्मे-साग़र[11] ने भी हसरत से निगाहें डालीं
जब बचाए हुए हम जामा - ए - अहराम[12] चले
हम फ़क़ीरों का खाली न रहे चुल्लू साक़ी
हम ग़रीबों का भी अल्लाह करे काम चले

१. शराब की लहर २. सहारे की लाठी या लकड़ी ३. का[बा] और काशी में ४. पूजा ५. शराब के पुजारियो ६. शराब का प्याला ७. तौबा को तोड़ने वाला ८. महफ़िल में ९. गुलाबी शराब का द[ौर] १०. कालचक्र ११. प्याले की आंखें १२. हज का लिबास

तौबा के बाद भी मुझे पहुँचे न मुझसे
यारों से तेरी चश्मे-मुरव्वत² से दू
है शेख उसकी शान भी नहीं जन्नत³ को
यारों का मयकदा तेरी जन्नत से दू

तौबा से तो मेरी कोमल मस्ती
जब टूटी है, जाम हो गई है
कुछ ज़हर न थी शराबे-अंगूर
क्या चीज़ हराम हो गई है

ज़माने - मयकदा[4] अर्शे-बरीं[5] मालूम होती है
ये ख़िश्ते-ख़ुम[6] फ़रिश्ते की जबीं[7] मालूम होती है
अरे साक़ी ज़रा मेरी शराबे - दस्त तो लाना
मय-ए-कौसर[8] तो बिल्कुल अंगबीं[9] मालूम होती है

शैख़ ने मांगी है अपनी उम्र को
मयकदे से अब पुरानी जाएगी
पीने आयें तो फ़रिश्ता-ख़ू[10] 'रियाज़'
हूर के दामन में छानी जाएगी

---

१. लाभ २. कृपादृष्टि ३. जन्नत ४. मधुशाला की धरत
सातवाँ आकाश ६. शराब के मटके की ईंट अर्थात् जिस मट्टी से मि
मटका बना है ७. माथा ८. जन्नत में शराब का एक स्रोत ९.
१०. देव-स्वभाव

जो हम मग़ए तो बोतल क्यों मलग पीरे-मुग़ां[1] रख दी
पुरानी दोस्ती भी ताक़ पर ऐ मेहरबां रख दी
ख़ुदा के हाथ है बिकना न बिकना मय का ऐ साक़ी
बराबर मस्जिदे - जामा के हम ने अब दुकां रख दी

महफ़िल में भी देखा है हसीनों को पिलाते
ख़ल्वत[2] में पिलाने का मज़ा और ही कुछ है
रिन्दों ने छिड़क दी जो तू पोंछ रहा है
ज़ाहिद[3], तेरी दाढ़ी में लगा और ही कुछ है

लज़्ज़त[4] भी उसकी ख़ास है नदशा भी देर पा
चोरी की हो कि मुफ़्त की हो या उधार की
ख़ुम[5] क्या है घर भी कोई जो भर दे शराब से
नीयत कभी भरे न मुझ बादा - ख़्वार[6] की

ये सर व मुहर बोतलें हैं जो शराब की
रातें हैं इनमे बन्द हमारे शबाब[7] का
ऐसी दो - आतशा[8] मय - ए - गुलगूं[9] कहां नसीब
आदत बुरी पड़ी तेरी जूठी शराब की

---

१. मधुशाला का मालिक २. एकान्त ३. विरक्त, पारसा ४. स्वाद ५. मटका ६. मद्यप ७. जवानी ८. दो बार खिंची हुई ९. गुलाबी शराब

मीना - ओ - जाम[1] देख के ख़ुश होगा मोहतसिब[2]
समझेगा वो खिली हुई कलियां गुलाब की
महफ़िल में पी जो बोले तो इस एहतियात से
मीना - ए - मय[3] ने बू न कभी दी शराब की
काम आएगी रियाज़[4] की मश्क़े - तवाफ़े - ख़ुम[4]
का'बे के गर्द[5] होंगे जो सूफ़ी शबाब की

मर गए फिर भी तअल्लुक़ ये है मयख़ाने से
मेरे हिस्से की छलक जाती है पैमाने से

उतरी है आस्मां से जो कल उठा तो ला
ताक़े - हरम से[6] शैख़ वो बोतल उठा तो ला
मुझ को भी इन्तिज़ार था अब्र[7] आए तो पियूं
साक़ी अगर ये सच है कि बादल उठा, तो ला

कैसे ये बादाख़्वार हैं सुन - सुन के पी गए
वाइज़ को कुछ मज़ा न किसी ने चखा दिया
इस वास्ते कि भाव - भगत मयकदे में हो
छा जो घर किसी ने तो का'बा बता दिया

---

१. सुराही और प्याला २. रसास्वादक ३. शराब की सुराही
राब के मटके की परिक्रमा का अभ्यास ५. चक्र (परिक्रमा)
स्जिद के ताक़ से ७. बादल

यों हवा जन्नत को वो अब्रे-करम[1] छाया हुआ
मयकदा जन्नत है, जन्नत में जो पी तो क्या हुआ
मैं जो खुम[2] पर झुक पड़ा तो हो गया वो मेरे सर
मुझ से बढ़कर आजकल नासेह[3] है कुछ बहका हुआ

क़र्ज़ लाया है कोई भेस बदल कर शायद
मयफ़रोशों का[4] है वाइज़[5] से तक़ाज़ा कैसा

कमबख़्त ने शराब का ज़िक्र इस क़दर किया
वाइज़ के मुंह से आने लगी बू शराब की

क्या तुझ से तेरे मस्त ने मांगा मेरे अल्लाह
हर मौजे-शराब[6] उठ के बनी हाथ दुआ का

आबे-ज़मज़म[7] के सिवा कुछ नहीं का'बे में रियाज़
मयकदा तुम जिसे समझे हो मदीना होगा

यहीं से बन्दगी दोनों को पहुंचे मयकदे वालो
तअल्लुक़ अब मेरा दैरो-हरम[8] से हो नहीं सकता

---

१. कृपारूपी बादल २. शराब का मटका ३. धर्मोपदेशक ४. मदिरा-विक्रेताओं का ५. धर्मोपदेशक ६. शराब की लहर ७. का'बे के एक पवित्र कुएं का पानी ८. काशी-काबा (मंदिर-मस्जिद)

मिलेगी खिदमते - मयखाना शायद काबे वालों
गुमां होंगे - हरम[1] आकर यहां पीरे - मुगां[2] हो

अच्छी पी ली खराब पी ली
जैसी पाई शराब पी ली

आदत सी है, नशा है न अब कैफ़[3]
पानी न पिया, शराब पी ली है

मेरा यही खयाल है जो मैंने पी नहीं
कोई हसीं पिलाए तो ये शै बुरी नहीं

जन्नत से कम सही मगर अच्छा था मयकदा
जब तक वहां रहे ग़मे फ़र्दा[4] तो कुछ न था

मेरी शराब की क्या क़द्र जाने तू वाइज
जिसे मैं पी के दुआ दूं वो जन्नती[5] हो जाए

धोके से पिला दी थी इसे भी दो घूंट
पहले से बहुत नर्म है वाइज की ज़बां अब

---

१. मस्जिद का मुल्ला २. मधुशाला का प्रबंधक ३. आनन्द ४. कल की चिन्ता ५. जन्नत का अधिकारी

गए मयखानों से कितने हरम को खानक़ाहों को
हम इक रह गए हैं अब पुराने बादाख्वारी में[1]

उठे कभी घबरा के तो मयखाने तक हो आए
पी आए तो फिर बैठ गए यादे-खुदा में

याद आई बहुत हम को, टूटी हुई तौबा भी
देखा जो कहीं हम ने टूटा हुआ पैमाना

काम मयखाने का हो जाएगा बन्द
चश्मे-साक़ी की हया[2] अच्छी नहीं

शराबे-नाब से साक़ी जो हम वुज़ू करते
हरम[3] के लोग तवाफ़े-खुमो-सबू[4] करते
शराब पीते ही सिजदे में उन को गिरना था
ये शग़्ल बैठ के मयनोश क़िबला-रू[5] करते

ये कह के निस्फ़ शब में दरे-मयकदा[6] खुला
मांगी है एक बजुर्ग-तहज्जुद-गुज़ार[7] ने

१. मद्यपों में २. साक़ी की आंखों की लज्जा ३. का'बा या मस्जिद ४. शराब के मटके-मटकियों की परिक्रमा ५. का'बे की ओर मुंह करके ६. मधुशाला का दरवाज़ा ७. आधी रात के बाद की नमाज़ पढ़ने वाला नमाज़ी

म जानते हैं लुत्फ़े - तक़ाज़ा - ए - मयफ़रोश[1]
ी नक़द में कहां जो मज़ा है उधार में

ुमार - आलूद आंखों पर[2] हज़ारों मयकदे सदक़े
वो काफ़िर बे पिये भी रात-दिन मख़्मूर रहता है

ये क्या मज़ाक़ फ़रिश्तों को आज सूझा है
ख़ुदा के सामने ले आये हैं पिला के मुझे

दिन में चर्ख़े ख़ुल्द[3] के शब[4] में मय-ए-कौसर[5] के ख़्वाब
हम हरम में[6] आ रहे मयख़ाना वीरां देख कर

तौबा करते हुए, रह रह के ये आता है ख़याल
मुंह मेरा देख के रह जाएगा साग़र मेरा

साल पलटे ले के ख़ुम[7] फेरी को निकले हैं 'रियाज़'
मयकदे कुछ वक़्फ़[8] हैं, इन शाह जी के वास्ते

---

१. मदिरा-विक्रेता के तक़ाज़े का आनन्द २. नशीली आंखें
र ३. जन्नत ४ रात ५ जन्नत में शराब का एक चश्मा ६. काबे
ा मन्दिर में ७ शराब का मटका ८ मुक़र्रर या समर्पित

क़द्र मुझ रिन्द की तुझ को नहीं ऐ पीरे-मुग़ां[1]
तौबा कर लूं तो कभी मयकदे आबाद न हों

उठाओ मेज़ से मय-ओ-साग़र 'रियाज़' जल्द
आते हैं इक बुज़ुर्ग पुराने ख़याल के

वो आ रहा है असा[2] टेकता हुआ वाइज़[3]
बहा दे इतनी कि साक़ी कहीं न थाह मिले

कमर सीधी करने ज़रा मयकदे तक
असा[4] टेकते क्या 'रियाज़' आ रहे हैं

किरन सूरज की निकली जामे-मय से[5]
ये कैसी धूप निकली चांदनी में

भर-भर के जाम बज़्म में छलकाये जाते हैं
हम उनमें हैं जो दूर से तरसाये जाते हैं

ये कम नहीं है बुढ़ापे में हम ने तौबा की
तमाम उम्र में हम ने ये एक काम किया

---

१. मधुशाला का मालिक या प्रबंधक २. लाठी ३. धर्मोपदेशक ४. लाठी ५. शराब के प्याले से

। जो मयकदा वो जन्नत है
: मी जाकर जवान हो जाते

र मयकदे में तुझको चढ़ाया ऐ शैख़
ो ऊंचे तेरी मस्जिद के किनारे निकले

में ईद मुफ़्त मुफ़लिस
की हो जाए 'रियाज़'
: इक चुल्लू कोई
ले तीस रोज़ों का हिसाब

- साफ़' ऐसी कि जिस ने पी फ़रिश्ता हो गया
दो'। ये हूर के दामन में है छानी हुई

भी बहके गए हम बादा-कशों के' हमराह
। जन्नत में हमें नासहे-मग़फ़ूर' मिले

र गई सरे-बाज़ार' शैख़ की पगड़ी
ह में दाम न होंगे उधार पी होगी

ा. तथा स्वच्छ २. विरक्त ३. मद्यपों के ४. बहके हुए
. बीच बाज़ार में

शैख जी डूब गए थे हौज़ में मयख़ाने के
डूब कर चश्मा-ए-कौसर[1] के किनारे निकले

नीची दाढ़ी ने आबरू रख ली
क़र्ज़ पी आए इक दोकां से आज

रुसवा

बाद तौबा के भी है दिल में ये हसरत बाक़ी
दे के क़समें कोई इक जाम पिला दे हम को

'वजाहत' झंझानवी

क़तआ

वाइज़[2] की गत बनाई थी रिन्दों ने[3] बेतरह
ये जानते थे उसका बस अब पाप कट गया
लेकिन वो दम चुराए पड़ा था ज़मीन पर
रिन्दों ने पुश्त[4] फेरी तो उठकर झपट गया

---

१ जन्नत में बहने वाला शराब का चश्मा २. धर्मोपदेशक (मुल्ला) ३. मद्यपों ने ४. पीठ

'वहशत' कलकत्तवी

क्या - क्या मुझे तग़ाफ़ुले - साक़ी[1] का था गिला
देखा तो मैं ही ज़र्फ़े - सुबूए - करम[2] न था

'वामिक़' जौनपुरी

पी लिया करते हैं जीने की तमन्ना में कभी
डगमगाना भी ज़रूरी है संभलने के लिए

'शकील' बदायूनी

तर्के - मय[3] ही समझ इसे नासेह[4]
इतनी पी है कि पी नहीं जाती

ज़ाहिद[5] की मयकशी पे तअज्जुब न कीजिये
लाती है रंग फ़ितरते - आदम[6] कभी - कभी

---

१. साक़ी की बेरुखी २. कृपा-पात्र ३. मदिरा-त्याग ४. धर्मो-
५. विरक्त, पारसा ६. आदि मानव की प्रकृति

ला रहा है मय कोई शीशे में[1] भर कर साम
किस क़दर पुरकैफ़ मन्ज़र[2] है नज़र के साम

शिकस्ते - बेख़ुदी[3] के मुस्तक़िल[4] सामान तो हो
न क्यों जी भर के पी लूं मयकदे वीरान तो हो

मयकदे का मयकदा ख़ामोश था मेरे ब
मैं हुआ वारिद[5] तो पैमाने सदा[6] देने ल

उठा जो मीना-ब-दस्त[7] साक़ी, रही न अब ताबे-ज़ब्त[8]
तमाम मयकश पुकार उट्ठे "यहां से पहले", "यहां से प

साक़ी नज़र से पिनहां[9], शीशे[10] तही-तही[11] से
बाज़ आए हम तो ऐसी बेकैफ़[12] ज़िन्दगी से

आ गई हैं रहमतें[13] फिर जोश में
होश में ऐ पीने वालो होश में

---

१. बोतल में २. आनन्दपूर्ण दृश्य ३. आत्मविसर्जन प
जय (पीने पर पाबन्दी के कारण) ४. स्थायी ५.
६. आवाजें ७. हाथ में सुराही लिए ८. सहनशक्ति ९. छु
१०. बोतलें ११. खाली-खाली १२. आनन्दरहित, फीकी १
की कृपाएं

सारा आलम[1] पा-ए-बादानोश पर[2]
एक साग़र दस्ते-बादानोश में[3]

हाय मेरा मातमे - तश्नालबी[4]
शीशा मिलकर रो रहा है जाम से

ने किन नज़रों से देखा आज साक़ी ने मुझ
तो ये समझा कि मुझ तक दौरे-जाम आ ही गया

खोल दे बाबे-मयकदा[5] साक़ी
इक फ़रिश्ता भी इन्तिज़ार में है

त के हसीं नज़्ज़ारों में पुरकैफ़[6] ख़ज़ाने और भी हैं
ना अगर वीरां है तो क्या, रिंदों के[7] ठिकाने और भी हैं
है तुझे पीने के लिए, ऐ दोस्त किसी उन्वान से[8] पी
का बहाना एक सही, पीने के बहाने और भी हैं

माने खनकते हैं न दौरे-जाम चलता है
दुनिया के रिन्दों में ख़ुदा का नाम चलता है

. संसार २. मद्यप के क़दमों पर ३. मद्यप के हाथ में
मा का सोग ५. मधुशाला का दरवाज़ा ६. आनन्दपूर्ण
रों के ८. शीर्षक या प्रसग से

'शकीले'-मस्त को मस्ती में जो कहना है कहने
ये मयखाना है ऐ वाइज यहां सब काम चलता

मैं नजर से पी रहा था तो ये दिल ने बद्दुआ
तेरा हाथ जिन्दगी भर कभी जाम तक न पहुं

रह न सकेंगे अब निहां[1] राजे-दरूने-मयकदा[2]
रिन्दों को होश आ गया पीरे-मुगां की[3] खैर हो

'शफ़ीक़' जौनपुरी

ये उजाला है हमारे ही क़दम से साक़ी
हम गए और तेरा मयकदा बेनूर[4] हुआ

'शहाब' जाफ़री

ग़ज़ल

मेरी मस्ती को मेरी आगही[5] पर नाज है साक़ी
जहां मैं हूं वहां आवाज हो आवाज है साक़ी

१. निहित २. मधुशाला के भीतरी भेद ३. मधुशाला के प्रब
की ४. प्रकाशहीन ५. जानकारी, ज्ञान

कहाँ सोया गया वो मर्कज़े-एहसास[1], आग़ाज़ से
बहुत दिन से है तू 'आमादा-परवाज़'[2] है साक़ी
सदा-ए-ज़िन्दगी[3] साज़ में रह-रहकर लरज़ती है
सुकूते-शब[4] मेरा हर्फ़े-लबे-एजाज़[5] है साक़ी
मैं जितनी रात सुनता हूँ सितारों की सदायें भी
कि पिन्हाँ[6] ख़ामुशी में उन्हीं का राज़ है साक़ी
ख़ुम[7] भरते ही आये हैं मय को कैसी ख़ामुशी छाई
मुझे सुनने दे सुनने दे, कोई आवाज़ है साक़ी
"शराब लाओ", "शराब लाओ" मुझे किसने पुकारा है
मुझे जाने दे जाने दे, मेरी आवाज़ है साक़ी

'शाद' अज़ीमाबादी

शे'र

ये बज़्मे-मय[9] है याँ कोताह-दस्ती[10] में है महरूमी[11]
जो बढ़ के ख़ुद उठा ले हाथ में मीना[12] उसी का है

आख़िरी जाम में क्या बात थी ऐसी साक़ी
हो गया पी के जो ख़ामोश, वो ख़ामोश रहा

---

१. अनुभूति का केन्द्र २. उड़ने के लिए प्रस्तुत ३. ज़िन्दगी की
४. रात की चुप्पी ५. जादुई होंठों से निकला अक्षर या बोल
निहित ८. शराब की मटकी ९. शराब की महफ़िल
१०. (संकोच) ११. वंचितता १२. मदिरा-पात्र

मयकदा है ये समझ-बूझ के पीना है रिन्द[1]
कोई गिरते हुए पकड़ेगा न बाज़ू तेरा

साक़ी की चश्मे-मस्त पे मुश्किल नहीं निगाह[2]
मुश्किल संभलना है दिले-बेक़रार का

ज़मीं पे जाम को रख दे, ज़रा ठहर साक़ी
मैं इस पे हो लूं तसद्दुक़[3] तो फिर उठा कि पियूं

लड़खड़ा के जो गिरा पांव पे साक़ी के गिरा
अपनी मस्ती के तसद्दुक ये मुझे होश रहा

हश्र[4] में रिन्द[5] ये खामोश सोहबते-मय[6] से छूटकर
पीरे-मुग़ां को[7] देख कर देने लगे दुहाइयां

देखा किये वो मस्त निगाहों से बार-बार
जब तक शराब आए, कई दौर हो गए

ग़ज़ब निगाह ने साक़ी की बन्दोबस्त किया
शराब बाद को दी, पहले सबको मस्त किया

---

१. मद्यप २. नज़र रखना ३. बलिहारी ४. प्रलय-क्षेत्र में ५. मद्यप
. शराब की संगत ७. मधुशाला के मालिक या प्रबंधक को

कहाँ से लाऊँ सब्रे-हज़रते-अय्यूब[1] ऐ साक़ी
ख़ुम[2] आएगा, सुराही आएगी तब जाम आएगा

'शाद' नरेशकुमार

क़त'अ

एक साग़र[3] फ़ज़ा में[4] लहरा कर
रुख़ हवादिस का[5] फेर दे साक़ी
ज़िन्दगी के मरीज़[6] चेहरे पर
मुस्कराहट बिखेर दे साक़ी

अपनी क़िस्मत बदल गई आख़िर
बेख़ुदी[7] रास आ गई शायद
गर्दिशे-जाम[8] ! शुक्रिया तेरा
गर्दिशे-वक़्त[9] थम गई शायद

वक़्त की तश्नगी[10] मिटाने को
तुझ से सय्याल[11] आग लें साक़ी

---

[1]. एक पैग़म्बर जो अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य ... (धैर्य की ओर संकेत है) २. शराब का मटका ३. प्या... में ५. घटनाओं का ६. बीमार ७. आत्मविस्... के प्याले का चक्र ९. कालचक्र १०. प्यास ११. तरल

उम्र बाक़ी पड़ी है सोने को
आज की रात जाग लें साक़ी

दावरे-हश्र[1] देखता क्या है
मैं वही रिन्दे-लाउबाली[2] हूं
इससे पहले कि तू सवाल करे
मैं खुद इक जाम का[3] सवाली हूं

साक़िया ! साक़िया ! संभाल इसे
फेंक दे न कोई जाल इसे
गर्दिशे-रोज़गार[4] आई है
इक दो साग़रों से[5] टाल इसे

डूबती सांस को उभारा है
नब्ज़ गिरती हुई संभाली है
मय को साग़र में डाल कर साक़ी
जान में तू ने जान डाली है

ए ग़मे-दिल ! बहार बन के मुझे
मयकदे की फ़ज़ा[1] पे छाने दे

---

१. खुदा २. धृष्ट मद्यप ३. प्याले का ४ कालचक्र ५. प्यालों से
वातावरण

मुद्दतों बाद मुस्कराया हूं
आज जी भर के मुस्कराने दे

हर तमन्ना गुनाह बन जाए
हर नफ़स[1] सर्द आह बन जाए
मयकदे का वजूद[2] हो न अगर
जिन्दगी खानक़ाह बन जाए

शैख़ साहब ! मुक़ाबला कैसा
हमसरी[3] क्या शराब-नोशों से[4]
एक इस्मतफ़रोश बेहतर है
आप जैसे खुदा-फ़रोशों से[5]

कैसे यक-दम[6] फ़ज़ा[7] बदलती है
ये करिश्मा अभी दिखाता हूं
तुम जरा गेसुओं को[8] बिखराओ
मैं भी लहरा के जाम उठाता हूं

---

१. श्वास २. अस्तित्व ३. समता ४. शराब पीने वा
को बेचने वालों से ६. एकाएक ७. वातावरण ८. बे

आलमे-बेख़ुदी[1] के बाद अकसर
होश में आए हम तो ये जाना
जह्रे-क़ातिल है होश की तल्ख़ा
इक हिमाक़त है होश में आना

मयकदे के दिये तो रौशन थे
अपने दिल का चिराग़ जल न सका
ऐसा संगीन[2] ग़म था सीने में
गर्मी-ए-मय[3] से भी पिघल न सका

बादाख़ाने में घूम कर देखें
लबे-साग़र[4] को चूम कर देखें
ऐ ग़मे-दिल अगर इजाज़त हो
दो घड़ी हम भी झूम कर देखें

ज़िन्दगी पर गर्द सी जमी देखी
नब्ज़े-हस्ती[5] थमी-थमी देखी
होश में जिसने भी मुझे देखा
उस ने मुझ में मेरी कमी देखी

---

१. मदिरा-पान द्वारा आत्मविसर्जन २. पथरीला (अत्यधिक
३. शराब की गर्मी ४. प्याले के होंठ ५. जीवन-नाड़ी

आख़िरी बार अपने होंट ज़रा
आबे-ख़ुश-रंग में[1] भिगो आऊं
अभी चलता हूं ऐ अजल[2] लेकिन
इक ज़रा मयकदे से हो आऊं

अपने एहसास की हलाकत[3] पर
ख़ून रोता हूं और जीता हूं
जब बकसरत[4] शराब पीता था
अब ब-हसरत[5] शराब पीता हूं

बादा ए-आतशी[6] से ऐ साक़ी
ग़मज़दों के दिमाग़ रौशन कर
आंसुओं की शिकस्ता[7] क़ब्रों पर
क़हक़हों के चिराग़ रौशन कर

ख़ुद से यूं बेनियाज़[8] होते हैं
जैसे दानाए-राज़[9] होते हैं
'शाद' साहब ख़राबे-मय[10] होकर
आदमी दिलनवाज़ होते हैं

---

१. सुन्दर रंग के पानी (शराब) में २. मृत्यु ३. हत्या ४. बहु-धिक ५. हसरत के साथ ६. आग रूपी शराब ७. टूटी-फूटी निश्चित ९. भेद जानने वाले ज्ञानी १०. मदिरा-पान के कारण तबा-

शे'र

ये इन्तिज़ार ग़लत है कि शाम हो जाए
जो हो सके तो अभी दौरे-जाम हो जाए
ख़ुदानख़्वास्ता पीने लगे जो वाइज़ भी
हमारे वास्ते पीना हराम हो जाए
मुझ ऐसे रिन्द[1] को भी तू ने हश्र में[2] या रब
बुला लिया है तो कुछ इन्तिज़ाम हो जाए

तल्ख़ी-ए-मय[3] ही इलाजे-तल्ख़ी-ए-आलाम[4] है
गर्दिशे - साग़र जवाबे - गर्दिशे - अय्याम[5] है

हमारी ज़िन्दगी का हुस्न मयख़ाने में है साक़ी
यहीं आकर ये दीवानी हसी मालूम होती है

हम अपने दर्द की तौहीन कर गए होते
अगर शराब न होती तो मर गए होते

ग़मे-दुनिया को बाहर मैं अकेला छोड़ आया था
वो मेरा मुन्तिज़र होगा न कर ताख़ीर[6] ऐ साक़ी

---

१. मद्यप २. प्रलय में ३. शराब की कड़वाहट ४. विपत्तियों की कड़वाहट का इलाज ५. कालचक्र का उत्तर ६. देर

ज़िन्दगी को मयकदे में बारहा जाना पड़ा
ऐ ग़मे-दुनिया तुझे दिलकश बनाने के लिए

आग़ा 'शायर' क़ज़लबाश

पी पिला कर उसे रहमत[1] की क़सम देते हैं
कैसे बन्दे हैं कि अल्लाह को दम देते हैं

'शायर' लखनवी

सिखा रहे हैं वो आदाबे - मयकशी[2] हम को
जो मयकदे में छलकते रहे सबू[3] की तरह

तू फ़क़त[4] जाम का मफ़हूम[5] समझ ऐ साक़ी
तशनगी[6] क्या है, ये मयख़्वार[7] समझ लेते हैं

जो लड़खड़ाए हैं पी के तलछट, उन्हें मुबारिक हो लड़खड़ा
मुझे है उन मयकशों पे हैरत जो बे पिये ही बहक गए

१ दया २. शराब पीने के नियम (शिष्टाचार
४. केवल ५. अर्थ ६. प्यास ७. मद्यप

'शेफ्ता'

क्या मयकदे में है कि मद्रिसे[1] में वो नहीं
अलबत्ता एक वां[2] दिले-बेमुद्दमा[3] न था

जो बात मयकदे में है इक-इक जबान पर
अफ़सोस मद्रिसे में है बिल्कुल निहां[4] हनोज़[5]

साक़ी की बेमदद न बनी रात को
मुतरिब[6] अगर्चे काम में अपने यगाना[7] था

आई जो आज काम में सहबा-ए-तुन्दो-तल्ख़[8]
साक़ी ने खूब राज़ कहे बारे-आम में[9]

'सबा' अफ़ग़ानी

उम्र भर गर्दिशे-साग़र[10] से रहा काम मुझे
इस लिए छू न सकी गर्दिशे-एय्याम[11] मुझे

---

१. पाठशाला या धर्मस्थल २ वहां ३. निरुद्देश्य मन ४. नि
५. अभी ६. गायक ७ अद्वितीय ८. तेज नशीली शराब ९ स
सामने १०. शराब के प्याले का चक्र अर्थात् मदिरा-पान ११. काल

ज़िन्दगी को मयकदे में बारहा आना पड़ा
ऐ ग़मे-दुनिया तुझे दिलकश बनाने के लिए

आग़ा 'शायर' क़िज़लबाश

पी पिला कर उसे 'रहमत'' की क़सम देते हैं
कैसे बन्दे हैं कि अल्लाह को दम देते हैं

'शायर' लखनवी

सिखा रहे हैं वो आदाबे - मयकशी' हम को
जो मयकदे में छलकते रहे सबू' की तरह

तू फ़क़त' जाम का मफ़हूम' समझ ऐ साक़ी
तश्नगी' क्या है, ये मयख़्वार' समझ लेते हैं

वो लड़खड़ाए हैं पी के तलछट, उन्हें मुबारिक हो लड़खड़ाना
मुझे है उन मयकशों पे हैरत जो बे पिये ही बहक गए हैं

१. ख़ुदा की दया २. शराब पीने के नियम (शिष्टाचार)
३. शराब की मटकी ४. केवल ५. अर्थ ६. प्यास ७. मद्यप

'शेफ्ता'

क्या मयकदे में है कि मद्रिसे[1] में वो नहीं
अलवत्ता एक वां[2] दिले-बेमुद्दआ[3] न था

जो बात मयकदे में है इक-इक जबान पर
अफ़सोस मद्रिसे में है बिल्कुल निहां[4] हनोज़[5]

साक़ी की बेमदद न बनी रात को
मुतरिब[6] अगर्चे काम में अपने यगाना[7] था

आई जो आज काम में सहबा-ए-तुन्दो-तल्ख़[8]
साक़ी ने खूब राज कहे बारे-आम में[9]

'सबा' अफ़ग़ानी

उम्र भर गर्दिशे-साग़र[10] से रहा काम मुझे
इस लिए छू न सकी गर्दिशे-एय्याम[11] मुझे

1. पाठशाला या धर्मस्थल 2. वहां 3. निरुद्देश्य मन 4. निहित 5. अभी 6. गायक 7. अद्वितीय 8. तेज नशीली शराब 9. सब के सामने 10. शराब के प्याले का चक्र अर्थात् मदिरा-पान 11. कालचक्र

'साइल' देहल्वी

मोहतसिब[1] तस्बीह[2] के दानों पे ये गिनता रहा
किन ने पी, किनने न पी, किन-किन के आगे जाम था

तकलोफ़े-इन्तिज़ार अबस[3] जाम के लिए
बोतल को तोड़ डालिये पैमाना हो गया
दो-चार मिल के बैठ गए बज़्मे-ऐश में
दो-चार खुम[4] लुंढा दिये मयख़ाना हो गया

हमेशा पी के मय जामो-सुराही तोड़ देता हूं
न मेरा दिल तरसता है, न फ़र्क़ आता है ईमां में

दरे-मयख़ाना[5] चौपट है, तहज्जुद[6] को हुई चोरी
गिरे टूटे हुए शीशे, फ़क़त[7] जूठे प्याले हैं
गुमां[8] किस पर करें मयकश, इधर वाइज़ उधर सूफ़ी
ख़ुदा रक्खे मुहल्ले में सभी अल्लाह वाले हैं

---

१. रसाध्यक्ष २. जपमाला ३. व्यर्थ ४. शराब के मटके ५. मधु-
का दरवाज़ा ६. आधी रात के बाद सुबह होने से पहले-पहले
[illegible] जाती है ७. केवल ८. भ्रम

'साक़िब' लखनवी

ये गवारा न किया दिल ने कि मांगूं तो मिले
वर्ना साक़ी को पिलाने में कोई इनकार न था

बढ़ाए हौसले दरिया-दिली ने साक़ी की
ज़रा से जाम में सौ बार आफ़ताब[१] आया

पिला के मुझ को निकाला है अपनी महफ़िल से
वो नेकियां नहीं अच्छी जो हों बदी के लिए

सोने वालों को क्या ख़बर ऐ रिन्द[२]
क्या हुआ एक शब में[३], क्या न हुआ

'साग़र' निज़ामी

ये मयकदा है तेरा मद्रिसा[४] नहीं वाइज़[५]
यहां शराब से इन्सां बनाए जाते हैं

---

१. सूरज २. मद्यप ३. रात में ४. पाठशाला ५. धर्मोपदेशक

ग़ज़ल

फिर मुझ आरज़ू-ए-जाम[1] हुई
फ़िक्रे-दुनिया-ओ-दीं[2] हराम हुई
मेरी तौबा का अब ख़ुदा-हाफ़िज़
वो छुपा आफ़ताब[3], शाम हुई
हम ने हर दिन को पांव से रौंदा
अपनी हर रात नज़्रे-जाम[4] हुई
मुहर-बर-लब[5] थी बन्द बोतल में
जब लुंढाई तो हम-कलाम[6] हुई
कुछ हसीं जलवे, चन्द जामे-शराब
यही जागीर अपने नाम हुई
मयपरस्ती[7] भी छोड़ दे 'साहिर'
ये परस्तिश[8] भी रस्मे-आम[9] हुई

मयकदे में भी आ कभी वाइज़[10]
एक दुनिया यहां भी बसती है
पीने वालो ये सोचना कैसा
कौन महंगी है कौन सस्ती है

शराब के प्याले की इच्छा २. संसार तथा धर्म की चि
प्याले की भेंट ५. होंठों पर मुहर लगी थी ६. सम्बो
..८ पूजन ९. सामान्य रस्म १०. धर्मोपदेशक

क्या ख़तर[1] गर्दिशे-फ़लक[2] से हमें
गर्दिशे-जाम[3] से मोहब्बत है
बादा, सहबा, शराब, मय, दारू
ऐसे हर नाम से मोहब्बत है

खाए जाती है नदामत मुझे इस ग़फ़लत की
होश में आ के चला आया हूं मयख़ाने से
तर्के-मय[4] का कभी आता ही नहीं दिल में ख़याल
हमने पैमाने-वफ़ा[5] बांधा है पैमाने से

'सीमाब' अकबराबादी

हाय 'सीमाब' उसकी मजबूरी
जिसने की हो शबाब में[6] तौबा

सैफ़ुद्दीन 'सैफ़'

रुबाई

अब दीदा-ए-पुरनम की[7] हक़ीक़त[8] क्या है
तू है तो मेरे ग़म की हक़ीक़त क्या है

१. ख़तरा २. कालचक्र ३. प्याले का दौर ४. मदिरा-त्याग ५. वफ़ा निभाने का वचन ६. जवानी में ७. सजल नेत्रों की ८. वास्तविकता

ग्रांख तुम्हारी मस्त भी है मस्ती का पैमाना भी
एक छलकते साग़र में मय भी है मयखाना भी

'साग़र' सद्दीक़ी

लोग कहते हैं रात बीत चुकी
मुझ को समझाओ, मैं शराबी हूं

'साहिर' हकीम ग्रहमद शुजाग्र

जो ग्राया शेख मयकदे में इक महशर हुग्रा बर्पा
कहां दीवानों की महफ़िल में ये बदबख़्त ग्रा निकला

'साहिर' ग्रब भी कहीं मिलता है तो मयख़ाने में
किस क़दर पास[१] है इस रिन्द[२] को ख़ुद्दारी[३] का

शोर मचा २. ख़याल, सम्मान ३. मद्यप ४. ग्रात्म

'साहिर' होशियारपुरी

क़त'ए

मापके वास्ते गुनाह सही
हम पियें तो सवाब[1] बनती है
सौ ग़मों को निचोड़ने के बाद
एक क़तरा शराब बनती है

वे पिये ही शराब से नफ़रत
ये जहालत नहीं तो फिर क्या है
जुहद[2] के बदले खुल्द[3] में हूरें
ये तिजारत नहीं तो फिर क्या है

ने'मतों के खजाने खोल दिये
रहमते-हक़[4] ने जोश में आकर
खुदगरज सीमो-ज़र पे[5] टूट पड़े
अह्ले-दिल ने[6] उठा लिये साग़र

---

१. पुण्य २. पारसाई ३. जन्नत ४. ईश्वरीय [illegible] ५. [illegible]
६. [illegible]

ग़ज़ल

फिर मुझ आरज़ू-ए-जाम[1] हुई
फ़िक्रे-दुनिया-म्रो-दीं[2] हराम हुई
मेरी तौबा का अब ख़ुदा-हाफ़िज़
वो छुपा आफ़्ताब[3], शाम हुई
हम ने हर दिन को पांव से रौंदा
अपनी हर रात नज़्रे-जाम[4] हुई
मुहर-बर-लब[5] थी बन्द बोतल में
जब लुंढाई तो हम-कलाम[6] हुई
कुछ हसीं जलवे, चन्द जामे-शराब
यही जागीर अपने नाम हुई
मयपरस्ती[7] भी छोड़ दे 'साहिर'
ये परस्तिश[8] भी रस्मे-आम[9] हुई

मयकदे में भी आ कभी वाइज़[10]
एक दुनिया यहां भी बसती है
पीने वालो ये सोचना कैसा
कौन महंगी है कौन सस्ती है

---

१. शराब के प्याले की इच्छा २. संसार तथा धर्म की चिन्त[illegible] [illegible]रज ४. प्याले की भेंट ५. होंटों पर मुहर लगी थी ६. सम्बोधि[illegible] [illegible]दिरा-पूजन ८. पूजन ९. सामान्य रस्म १०. धर्मोपदेशक

इक जाम अगर हुस्ने-अदा से[1] मिल जाए
अफ़कारे-दो आलम की[2] हक़ीक़त क्या है

'सौदा'

इस मयकदे में 'सौदा' हम तो कभी न बहके
सब मस्तो-बेख़बर थे हुशियार था सो मैं था

मयकशां ! रूह हमारी भी कभी शाद[3] करो
टूटे गर बज़्म में[4] शीशा[5] तो हमें याद करो

गर हो शराबो-ख़ल्वतो-महबूबे-ख़ूबरू[6]
ज़ाहिद[7] तुझे क़सम है जो तू हो तो क्या करे

मयकदे और काबे में है क्या तफ़ावत[8] शैख़ जी[9]
शीशा[10] है पत्थर की हर इक सिल में, समझो तो कहूं

---

१. सुन्दर अदा से २. दोनों लोकों के दर्शन की ३. प्रसन्न ४. महफ़िल में ५. बोतल ६. शराब, एकान्त तथा सुन्दर प्रेयसी ७. विरक्त, पारसा ८. फ़र्क़ ९. धर्मगुरु या मुल्ला जी १०. बोतल

कब से ऐ 'सौदा' शराब इस बज़्म में पीते हैं यार
तू ने ऐ कमज़र्फ़[1] की पहले ही पैमाने में[2] घूम

क्या करूंगा ले के वाइज़ हाथ से हूरों के जाम
हूं मैं साग़र-कश[3] किसी की नर्गिसे-मख़मूर का[4]

कैफ़ियते-चश्म[5] उसकी मुझे याद है 'सौदा'
साग़र को[6] मेरे हाथ से लेना कि चला मैं

साक़ी गई बहार, रही दिल में ये हवस
तू मिन्नतों से जाम दे और मैं कहूं कि बस

न देखा जो कुछ जाम में जम[7] ने अपने
वो इक क़तरा-ए-मय में[8] हम देखते हैं

साक़ी, है यक-तबस्सुमे-गुल[9] मौसमे-बहार[10]
ज़ालिम भरे है जाम तो जल्दी से भर कहीं

---

१. अपात्र २. प्याले में ३. प्याला पीने वाला ४. नर्गिस जैसी मदमाती आंखों का ५. आंखों की मस्ती ६. शराब के प्याले को ७. जनसमूह ८. शराब की बूंद में ९. फूल की मुस्कान (क्षण-भर के लिए) १०. वसन्त ऋतु

'हफ़ीज़' जालंधरी

ऐ मुब्तिला-ए-ज़ीस्त[1] ठहर ख़ुदकशी न कर
तेरा इलाज ज़हर नहीं है शराब है

फ़िरदौस[2] की तहूर[3] भी आख़िर शराब है
मुझको न ले चलो मेरी नीयत ख़राब है

वो सामने धरी है सुराही भरी हुई
दोनों जहान आज हैं मेरे अख़्तियार में

दौर[4] ये है कि दौरे-मय भी नहीं
और—ऐसी तो और शै भी नहीं

मयकदे बंद हैं तो मस्जिद तक
हम से होगी ये राह तै भी नहीं

हम ख़ूने जिगर पी के चले जाएंगे साक़ी
ले शीशा-ए-दिल[5] तोड़ दे पैमाना बना दे

. जीवन-ग्रस्त २. जन्नत ३. जन्नत में मिलने वाली एक शराब
ाल, समय ५. दिल रूपी बोतल

सुना है मैंने भी ज़िक्रे-शराबो-हूरो-क़सर[1]
ख़ुदा का शुक्र है नीयत मेरी ख़राब नहीं

'हफ़ीज़' जौनपुरी

बादे-तौबा[2] भी वही याद है मयख़ाने की
गर्दिश[3] आंखों में फिरा करती है पैमाने की[4]

'हफ़ीज़' बनारसी

रश्क[5] से देखें न क्यों याराने-मयख़ाना[6] मुझे
सब को जामे-मय[7] मिला आंखों का पैमाना[8] मुझे

'हसरत' मोहानी

मश्वुरे दे जो तर्के-मय के[9] हमें
ऐसे ग़मख़्वार[10] से ख़ुदा की पनाह

१. (जन्नत की) शराब, हूरों और महलों की चर्चा २. तौबा के बाद ३. चक्र ४. प्याले की ५. ईर्ष्या ६. मधुशाला के मित्र ७. शराब का प्याला ८. प्याला ९. मदिरापान के त्याग के १०. हितैषी

या रब हमारे बाद भी बज़्मे-शराब में[1]
साक़ी के दम से दौरे-मय-ए-अरग़वां[2] रहे

तूने रख दी थी जहां छीन के हम से बोतल
रूहे-मय-सी[3] उसी जानिब[4] निगरां[5] है साक़ी

ये हुआ बेताबियों पर नश्शा-ए-मय का[6] असर
कह दिया सब उनसे हाले-शौक़[7] गुस्ताख़ाना[8] आज

मैं वो रिन्दे-बादापरस्त[9] हूं कि हुआ जो मयकदे में गुज़र
किये ख़ैर मक़दम[10] इधर से मैं तो उधर से पीरे-मुग़ां[11] उठा

'हाली' मोलाना

क़त'आ

शैख़[12] रिन्दों में[13] भी हैं कुछ पाकबाज़[14]
सब को मुल्ज़िम तू ने ठहराया अबस[15]

---

१. शराब की महफ़िल में २. गुलाबी शराब का दौर ३. मस्ती की आत्मा ४. ओर ५. देख रही ६. शराब के नशे का ७. 'मुझे आपसे मुहब्बत है'—यह बात ८. धृष्टता-पूर्वक ९. मदिरा का पुजारी मद्यप १०. स्वागत ११. मधुशाला का प्रबंधक १२. धर्मगुरु या मुल्ला १३. मद्यपों में १४. पुनीतात्मा १५. व्यर्थ

आ निकलते थे कभी मस्जिद में हम
तू ने जाहिद हमको शर्माया अबस

बज़्मे-मय[1] अच्छी है, जो दुनिया है ऐ मयख़्वार[2]! हेच[3]
यां समझ लेते तो हैं दुनिया को दम भर यार, हेच

रिया[4] को सिद्क़[5] से है जामे-मय[6] बदल लेता
तुम्हें भी है कोई याद ऐसी कीमिया[7] साक़ी

अज्ञात शायर

ख़ानक़ाहों से है पोशीदा[8] तअल्लुक़ जिनका
रास्ते ऐसे गए हैं कई मयख़ाने को

मुद्दतें गुज़री हैं शग़्ले-मयकशी[9] छूटे हुए
वो पड़े हैं ताक़ पर जामो-सुबू[10] टूटे हुए

पी के हम तुम जो चले झूमते मयख़ाने से
झुक के क्या बात कही शीशे ने[11] पैमाने से

१. शराब की महफ़िल २. मद्यप ३. तुच्छ ४. पाखंड ५. सच्चा ६. शराब का प्याला ७. रसायन ८. छुपा ९. मदिरा-पान का मनोविनोद १०. प्याले और मदिरा-पात्र ११. बोतल ने

इस पुस्तक में प्रेस की भूल से कुछ अशुद्धियां रह गई हैं, उन्हें इस प्रकार पढ़ें

पृष्ठ सं०	अशुद्ध	शुद्ध
२४	अस्तर शीरानी	'अख़्तर' शीरानी
३८	'अस्तर' अली अस्तर	'अख़्तर' अली अख़्तर
३९	'अस्तर' अनसारी अकबराबादी	'अख़्तर' अनसारी अकबराबादी
३९	'अस्तर' अनसारी देहल्वी	'अख़्तर' अनसारी देहल्वी
४०	'अस्तर' लखनवी	'अख़्तर' लखनवी
४१	'अस्तर' हरीचन्द	'अख़्तर' हरीचन्द
४५	अली जवाद जैदी	अली जवाद ज़ैदी
५१	'आरजू' लखनवी	'आरज़ू' लखनवी
५९	कमाल अहमद सिद्दीका	कमाल अहमद सिद्दीक़ी
६३	'कैफी' दत्तात्रय	'कैफ़ी' दत्तात्रय
६८	'जज्बी' मुईन अहसन	'जज़्बी' मुईन अहसन
६९	'जफर' बहादुरशाह	'ज़फ़र' बहादुरशाह
६९	सिराजुद्दीन 'जफर'	सिराजुद्दीन 'ज़फ़र'
७१	जहूर नजर	ज़हूर नज़र
७६	जुबेर रिजवी	'ज़ुबेर' रिज़वी
७६	'जेब' उस्मानिया	'ज़ेब' उसमानिया
८७	'नज्म' तबातबाई	'नज़्म' तबातबाई
८८	'नजम' नक़वी	'नज़्म' नक़वी
१०८	फैज अहमद 'फैज'	फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'
१११	'बेखुद' देहल्वी	'बेख़ुद' देहल्वी
१२५	मुस्तुफा जैदी	मुस्तुफ़ा ज़ैदी
१३४	'राही' कुरैशी	'राही' क़ुरैशी
१३५	'रियाज' खैराबादी	रियाज़ ख़ैराबादी
१६६	'शेफ्ता'	'शेफ़्ता'
१७७	सैफुद्दीन 'सैफ'	सैफ़ुद्दीन 'सैफ़'